بسم الله الرحمن الرحيم

لا اله الا الله محمد رسول الله

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[स॰] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 26
Issue - 12

राह-ए-ईमान

दिसम्बर
2024 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

संपादक - मंडल
फज़ल नासिर

सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य

टाइटल डिज़ाइन
खान मामून अहमद

मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.

कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (इत्मामुल हुज्जत) 4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 18.10.2024) 8
7. इस्लाम का जीवित होना हम से एक फ़िदिया (क़ुरबानी) मांगता है 12
8. दावा मुसलेह मौऊद के संबंध में वैभवशाली घोषणा 17
9. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुछ हदीसें 27

☆ ☆ ☆

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

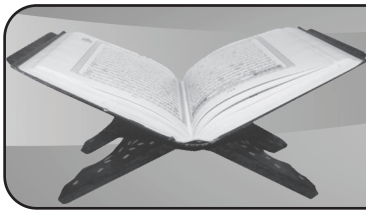

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

क़ुरआन की आयत का अनुवाद:- 4-तुम्हारे लिए मुर्दार, रक्त, सुअर का माँस और वह जानवर जिस पर (ज़िबह के समय) अल्लाह को छोड़ कर किसी दूसरे का नाम पुकारा गया हो और गला घोंटने या किसी कुण्ठित शस्त्र के घाव से मरा हुआ या ऊँचे स्थान से गिर कर या सींग लगने से मरा हुआ अथवा जिसे किसी हिंसक-पशु ने फाड़ खाया हो सिवाय इस के कि जिसे मरने से पहले तुम ने ज़िबह कर लिया हो और जिस को किसी देवी-देवता के स्थान पर ज़िबह किया गया हो, हराम (अवैध) ठहराया गया है और तीरों द्वारा हिस्सा मालूम करना भी। यह सब कुछ आज्ञा का उल्लंघन है। जो लोग इन्कार करने वाले हैं वे आज तुम्हारे धर्म (को हानि पहुँचाने) से निराश हो गए हैं। इस लिए तुम उन से न डरो और मुझ से डरो। आज मैं ने तुम्हारे (हित के) लिए तुम्हारा धर्म मुकम्मल (सर्वांगपूर्ण) कर दिया है और तुम पर अपने उपकार को पूरा कर दिया है तथा तुम्हारे लिए धर्म के रूप में इस्लाम को पसन्द किया है, किन्तु जो व्यक्ति भूख के कारण विवश हो जाए तथा वह पाप की ओर झुकने वाला न हो (और वह हराम वस्तुओं में से कुछ खा ले) तो (याद रखो कि) अल्लाह (विवशतावश होने वाली) भूल-चूक को क्षमा करने वाला है एवं बार-बार दया करने वाला है।

(सूरह अल माइदा 5-6)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत अबू हुरैरह वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला फरमाता है मनुष्य के सब काम अपने लिए हैं मगर रोज़ा मेरे लिए है और मैं ख़ुद उसका बदला बनूंगा अर्थात उसकी इस नेकी के बदले में उसे अपना दर्शन (दीदार) नसीब करूँगा। अल्लाह तआला फरमाता है रोज़ा एक ढाल है, अत: तुम में से जब किसी का रोज़ा हो तो न वह बेहूदा बातें करे, न शोर करे अगर उससे कोई गाली गलोच या लड़ाई झगड़ा करे तो वह उत्तर दे कि मैंने तो रोज़ा रखा हुआ है। कसम है उस हस्ती की जिस के हाथ में मुहम्मद की जान है! रोज़ेदार के मुँह की बू (गंध) अल्लाह तआला के निकट कस्तूरी से भी अधिक शुद्ध और सुखद है। क्योंकि उसने अपनी यह हालत ख़ुदा तआला के लिए की है। रोज़ेदार के लिए दो खुशियां निर्धारित हैं एक खुशी उसे तब होती है जब वह रोज़ा खोलता है और दूसरी तब होगी जब रोज़े के कारण उसे अल्लाह तआला की मुलाकात नसीब होगी। (बुख़ारी किताबुस्सौम)

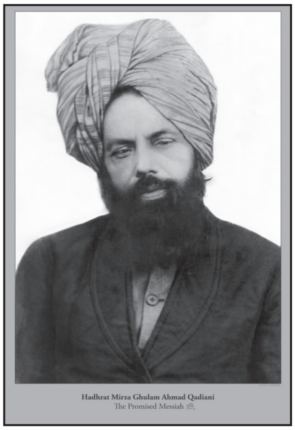

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

मैं सदैव विनय तथा गुमनामी का जीवन पसंद करता हूँ

नासमझ लोग एतराज़ करते हैं कि मैं अपने दर्जे को सीमा से बढ़ाता हूँ। मैं ख़ुदा तआला की क़स्म खाकर कहता हूँ कि मेरी प्रकृति तथा स्वभाव में ही यह बात नहीं कि मैं अपने लिए किसी प्रशंसा का इच्छुक रहूँ और अपनी महानता के प्रदर्शन से प्रसन्न हूँ। मैं सदैव विनय तथा गुमनामी को पसंद करता रहा लेकिन यह मेरे अधिकार तथा सामर्थ्य से बाहर था कि ख़ुदा तआला ने ख़ुद मुझे बाहर निकाला और जितना मेरी प्रशंसा तथा महानता का प्रदर्शन उसने अपनी पवित्र वाणी में जो मुझ पर उतारी गई है, किया यह समस्त प्रशंसा तथा महानता आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही की है। नादान इस बात को नहीं समझ सकता परन्तु नेक स्वभाव और सूक्ष्म दृष्टि से देखने वाला बुद्धिमान समझ सकता है कि इस समय निश्चित ही अनिवार्य था कि जब कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इतना अधिक अपमान किया गया है और ईसाई धर्म के प्रचारकों तथा उपदेशकों ने अपनी पुस्तकों तथा भाषणों के माध्यम से उस सय्यदुल क़ौनैन की शान में गुस्ताख़ियाँ की हैं और एक कमज़ोर मरियम के बच्चे को ख़ुदा की कुर्सी पर जा बैठाया है। अल्लाह तआला के स्वाभिमान ने आप अलैहिस्सलाम का वैभव प्रकट करने के लिए यह निर्धारित किया था कि आपके एक तुच्छ गुलाम को मसीह इबन-ए-मरियम बना के दिखा दिया। जब आपकी उम्मत का एक व्यक्ति इतने बड़े दर्जे प्राप्त कर सकता है तो इससे आपके वैभव का पता लग सकता है। अत: यहां ख़ुदा तआला ने जितनी अधिक महानता इस सिलसिले की दिखाई है और जो कुछ प्रशंसा की है यह वस्तुत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही की महानता तथा वैभव के लिए है परन्तु नादान इन बातों से लाभ नहीं उठा सकते।

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रकटन के निशान

इस समय शताब्दी में से बीस वर्ष गुज़रने को हैं और अंतिम युग है चौधवीं शताब्दी है कि जिसके बारे में समस्त कश्फ़ वालों ने कहा कि मसीह मौऊद चौधवीं शताब्दी में आएगा। वह समस्त चिन्ह तथा निशान जो मसीह मौऊद के आने के बारे में पहले से बताए गए थे प्रकट हो गए। आसमान ने सूर्य तथा चंद्र ग्रहण से और ज़मीन ने ताऊन (प्लेग) से गवाही दी है और बहुत से सौभाग्यशाली लोगों ने इन निशानों को देखकर मुझे स्वीकार किया और फिर और भी बहुत से निशान उनकी ईमानी शक्ति को बढ़ाने के लिए ख़ुदा तआला ने प्रकट किए और इस प्रकार यह जमाअत दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है कोई एक बात होती तो संदेह करने का स्थान हो सकता था परन्तु यहां तो ख़ुदा तआला ने उनको निशान पर निशान दिखाए और हर प्रकार से संतुष्टि तथा सांत्वना के मार्ग दिखाएं, लेकिन बहुत ही कम समझने वाले निकले। मैं हैरान होता हूँ कि क्यों ये लोग जो मेरा इनकार करते हैं इन आवश्यकताओं पर दृष्टि नहीं डालते जो इस समय एक मुस्लेह (सुधारक) को चाहती हैं। (मल्फ़ूज़ात जिल्द-4)

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तकः "इत्मामुलहुज्जत" (हुज्जत पूरी करना)

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

मौलवी रुसुल बाबा साहिब अमृतसरी की पुस्तक हयातुल मसीह पर एक और दृष्टि तथा एक हज़ार रुपए इनामी (रकम) जमा कराने के लिए निवेदन

...अफ़सोस कि हमारे भोले भाले मौलवी दलील और दावे में भी अन्तर नहीं कर सकते, और यदि किसी दावे पर दलील मांगी जाए तो एक और दावा प्रस्तुत कर देते हैं और नहीं समझते कि वह दावा स्वयं ऐसा ही सबूत का मुहताज है जैसा कि पहला दावा। हमने अपने विरोधी मत रखने वाले मौलवियों से हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के जीवित रहने एवं मृत्यु के बारे में केवल एक ही प्रश्न किया था। यदि ईमानदारी से उस प्रश्न पर विचार करते तो उनकी हिदायत (मार्ग दर्शन) के लिए एक ही प्रश्न पर्याप्त था। परन्तु किसी को हिदायत पाने की इच्छा होती तो विचार भी करता। प्रश्न यह था कि महा प्रतापी ख़ुदा ने पवित्र क़ुर्आन में हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में दो स्थान पर تَوَفِّيْ (तवफ़्फी) का शब्द प्रयोग किया है और यह शब्द हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में भी पवित्र क़ुर्आन में आया है तथा ऐसा ही हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की दुआ में भी यही शब्द अल्लाह तआला ने वर्णन किया है तथा कितने अन्य स्थानों में भी मौजूद है। उन समस्त स्थानों पर दृष्टि डालने से एक न्यायप्रिय व्यक्ति पूर्ण सन्तोष से समझ सकता है कि तवफ़्फी के अर्थ प्रत्येक स्थान पर रूह कब्ज़ करने और मारने के हैं न कि कुछ और। हदीस की पुस्तकों में भी यही मुहावरा भरा हुआ है। हदीस की पुस्तकों में तवफ़्फी के शब्द को सैकड़ों स्थान पर पाओगे परन्तु क्या कोई सिद्ध कर सकता है कि मारने के अतिरिक्त किसी अन्य अर्थ में भी प्रयोग हुआ है? कदापि नहीं, बल्कि यदि एक अरब अनपढ़ व्यक्ति को कहा जाए कि تُوُفِّيَ زَيْدٌ तो वह इस वाक्य से यही समझेगा कि ज़ैद मृत्यु पा गया। खैर अरबों का आम मुहावरा भी जाने दो स्वयं आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक प्रवचनों से भी यही सिद्ध होता है कि जब कोई सहाबी या आप के परिजनों में से मृत्यु पाता तो आप तवफ़्फी के शब्द से ही उसकी मृत्यु प्रकट करते थे। और जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मृत्यु पाई तो सहाबा ने भी तवफ़्फी के शब्द से ही आप की मृत्यु (वफ़ात) बयान की। इसी प्रकार हज़रत अबूबकर की मृत्यु, हज़रत उमर की मृत्यु, निष्कर्ष यह कि समस्त सहाबा की मृत्यु तवफ़्फी के शब्द से ही लिख-लिख कर वर्णन हुई, और मुसलमानों की मृत्यु के लिए यह शब्द एक सम्मान का शब्द ठहराया गया। तो फिर जब मसीह पर यही शब्द प्रयोग हुआ तो क्यों उसके स्वयं बनाए हुए अर्थ लिए जाते हैं। यदि यह आम मुहावरे का फैसला स्वीकार नहीं तो फैसले का दूसरा मार्ग यह है कि यह देखा जाए कि मसीह के बारे में जो क़ुर्आन की आयतों में तवफ़्फी का शब्द मौजूद है उसके अर्थ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके

सहाबा ने क्या किए हैं। अत: हमने यह छान-बीन भी की तो छान-बीन के पश्चात् सिद्ध हुआ कि सही बुख़ारी में अर्थात किताबुत्तफ्सीर में आयत فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ के अर्थ आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से मारना ही लिखा है। और फिर इसी स्थान पर आयत اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ के अर्थ हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. से مُمِيْتُكَ लिखे हैं अर्थात हे ईसा मैं तुझे मारने वाला हूं। अब इन मौलवियों से कोई पूछे कि पहला फैसला तो तुम ने स्वीकार न किया, परन्तु सहाबा का फ़ैसला और विशेष तौर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़ैसला स्वीकार न करना और फिर भी कहते रहना कि तवफ़्फी के और अर्थ हैं, ईमानदारी है या बेईमानी। ऐसे द्वेष पर भी हज़ार अफ़सोस कि एक शब्द के अर्थ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुंह से भी सुन कर स्वीकार न करें बल्कि कोई अन्य अर्थ बनाएं तथा उस फ़ैसले को स्वीकार न करें जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वयं कर दिया है। अपने विवाद को अल्लाह और रसूल की ओर न लौटाएं बल्कि अरस्तु और अफलातून के तर्कशास्त्र से सहायता लें। यह सदाचारी लोगों का आचरण नहीं है, यद्यपि निर्दय और कठोर हृदय वाले सदैव ऐसा ही करते हैं। हमारे लिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गवाही से बढ़कर अन्य कोई गवाही नहीं हमारा तो इस बात को सुनकर शरीर कांप जाता है कि जब एक व्यक्ति के सामने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़ैसला प्रस्तुत किया जाए तो वह उसे स्वीकार नहीं करता और दूसरी ओर बहकता फिरता है। फिर न मालूम उन लोगों के ईमान किस प्रकार के हैं कि न पवित्र–क़ुर्आन का फैसला उनकी दृष्टि में कुछ चीज़ है न रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़ैसला, न सहाबा की तफसीर। यह कैसा समय आ गया है कि मौलवी कहला कर अल्लाह-रसूल को छोड़ते जाते हैं, और यदि बहुत तंग किया जाए और कहा जाए कि जिस हालत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने تَوَفِّيْ के अर्थ 'मारना' कर दिए हैं तो फिर आप लोग क्यों स्वीकार नहीं करते तो उन लोगों का अन्तिम उत्तर यह है कि हज़रत मसीह के जीवित रहने पर सर्वसम्मति हो चुकी है। फिर हम क्योंकर स्वीकार कर लें। परन्तु यह बहाना भी गुनाह से अधिक बुरा और अत्यन्त घृणित चालाकी तथा असभ्यता है क्योंकि जिस इज्मा (सर्वसम्मती) में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सम्मिलित नहीं हैं बल्कि सर्वथा उसके विरोधी हैं वह इज्मा के साथ और क्या वास्तविकता रखता है, इसके अतिरिक्त इज्मा का दावा भी सरासर झूठ और इफितरा है। (देखो पुस्तक मज्मअ बिहारुल अनवर जिल्द-1, पृष्ट-286) जो उसमें حَكَمًا के शब्द की व्याख्या में लिखा है-

ای حاکمابھٰذہ الشریعة حکما ای ینزل عیسی ینزل لانبیا والاکثرا عیسی لم یمت وقال مالك ماتت وھو ابن ثلاث وثلاثین سنة۔

अर्थात ईसा ऐसी हालत में उतरेगा जो उस शरीअत के अनुसार आदेश करेगा न कि नबी होकर। और अधिकांश का यह कथन है कि ईसा नहीं मरा। **और इमाम मालिक ने कहा है कि ईसा मर गया और वह तैंतीस वर्ष का था जब निधन हुआ।** (शेष.....) (पुस्तक: इत्मामुलहुज्जत पृष्ठ 57-60)

☆ ☆ ☆

सम्पादकीय

बहुत हैं जो ऊपर से साफ हैं परन्तु अन्दर से सांप हैं

जमात अहमदिया के संस्थापक अपनी जमाअत को नसीहत करते हुए क्या खूब फरमाते हैं :

"लोगों के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करो ताकि तुम स्वीकार किए जाओ। बहुत हैं जो शालीनता प्रकट करते हैं परन्तु अन्दर से भेड़िए हैं, बहुत हैं जो ऊपर से साफ हैं परन्तु अन्दर से सांप हैं। अतः तुम ख़ुदा के समक्ष स्वीकार्य नहीं हो सकते जब तक अन्दर और बाहर समान न हो। बड़े होकर छोटों पर दया करो न कि उनका अपमान, ज्ञानी होकर अज्ञानियों को भलाई का पाठ पढ़ाओ न कि स्वयं को श्रेष्ठ समझकर उनका अनादर, धनवान होकर निर्धन की सेवा करो न कि स्वयं श्रेष्ठ बनकर उन पर अभिमान। विनाश के मार्गों से भयभीत रहो, ख़ुदा से डरते रहो, शालीनता एवं सदाचार का अनुसरण करो, मानव की उपासना न करो, केवल अपने ख़ुदा के लिए त्याग करो, संसार से हृदय मत लगाओ, ख़ुदा के हो जाओ, उसी के लिए जीवन व्यतीत करो, उसके लिए प्रत्येक अपवित्रता और पाप से घृणा करो क्योंकि वह पवित्र है। हर सुबह तुम्हारे लिए साक्ष्य दे कि तुम ने ख़ुदा में लीन रहते हुए रात्रि व्यतीत की। हर शाम तुम्हारे लिए साक्ष्य दे कि तुम ने डरते-डरते दिन व्यतीत किया। संसार के अभिशापों और फटकारों से मत डरो कि वे धुंए की भांति देखते-देखते लुप्त हो जाती हैं। वे दिन को रात में परिवर्तित नहीं कर सकतीं। तुम ख़ुदा के अभिशाप से डरो जो आकाश से आता है और जिस पर गिरता है उसकी लोक व परलोक दोनों स्थानों पर जड़ काट देता है। तुम आडम्बर से स्वयं को सुरक्षित नहीं रख सकते क्योंकि तुम्हारे ख़ुदा की दृष्टि तुम्हारे पाताल तक है। क्या तुम उसको धोखा दे सकते हो। अतः तुम सीधे और स्वच्छ हो जाओ, पवित्र और निष्कपट हो जाओ। यदि तुम्हारे अन्दर थोड़ा सा भी अन्धकार विद्यमान है तो वह तुम्हारे सम्पूर्ण प्रकाश को नष्ट कर देगा। यदि तुम्हारे अन्दर किसी भी स्तर पर अभिमान, आडम्बर, आलस्य या स्वयं को ही श्रेष्ठ समझने की भावना व्याप्त है तो तुम ख़ुदा के समक्ष स्वीकार योग्य नहीं। ऐसा न हो कि तुम कुछ बातों को लेकर स्वयं को धोखा देते रहो कि जो कुछ तुमने करना था कर चुके, जबकि ख़ुदा की इच्छा है कि तुम्हारे जीवन का पूर्ण काया-कल्प हो। वह तुमसे एक मौत माँगता है जिसके पश्चात वह तुम्हें जीवित करेगा। तुम आपस में जल्द सुलह करो, अपने भाइयों के दोषों को क्षमा करो क्योंकि उद्दण्ड है वह मनुष्य जो अपने भाई से समझौता करने के लिए तैयार नहीं। वह काटा जाएगा क्योंकि वह एकता को खंडित करता है। तुम हर पहलू से अहंकार को त्याग दो, आपसी द्वेष मिटा दो, सच्चे होकर झूठे की भांति विनम्र रहो ताकि तुम्हें क्षमा किया जा सके। अंहकार में मत बढ़ो कि जिस द्वार पर तुम्हें बुलाया गया है उसमें एक अहंकारी मनुष्य प्रवेश नहीं कर सकता। दुर्भाग्यशाली है वह मनुष्य जो इन बातों को नहीं समझता जो ख़ुदा के मुख से निकलीं और मैंने उनका वर्णन किया। यदि तुम चाहते हो कि आकाश पर ख़ुदा तुम से प्रसन्न हो तो तुम परस्पर इस प्रकार एक हो जाओ जैसे एक पेट में से दो भाई।..."

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना

मुनाजात और तब्लीग़-ए-हक़

ऐ ख़ुदा ऐ कारसाज़ो[1] ऐब[2] पोशो[3] किरदगार[4]
ऐ मेरे प्यारे मेरे मुहसिन[5] मेरे परवरदिगार[6]
किस तरह तेरा करूँ ऐ ज़ुलमिनन[7] शुकर ओ सिपास[8]
वह ज़ुबान लाऊँ कहाँ से जिससे हो ये कारोबार
बदगुमानों[9] से बचाया मुझ को ख़ुद बन कर गवाह
कर दिया दुश्मन को इक हमले से मग़लूब[10] ओ ख़्वार[11]
काम जो करते हैं तेरी राह में पाते हैं जज़ा[12]
मुझ से क्या देखा के यह लुत्फ़ ओ करम[13] है बार-बार
तेरे कामों से मुझे हैरत है ऐ मेरे करीम !
किस अमल पर मुझ को दी ह खिल्लते[14] कुरब ओ जवार[15]
किरम[16] खाकी हूँ मेरे प्यारे न आदम ज़ाद हूँ
हूँ बशर की जाए नफ़रत और इन्सानों की आर[17]
यह सरासर फ़ज़्ल ओ एहसान है कि मैं आया पसन्द
वरना दरगाह[18] में तेरी कुछ कम न थे ख़िदमत गुज़ार[19]
दोस्ती का दम जो भरते थे वह सब दुश्मन हुए
पर ना छोड़ा साथ तूने ऐ मेरे हाजत बरार[20]
ऐ मेरे यारे यगाना ऐ मेरी जाँ की पनाह
बस है तू मेरे लिए मुझ को नहीं तुझ बिन बकार
मैं तो मर कर ख़ाक होता गर न होता तेरा लुत्फ़
फिर ख़ुदा जाने कहाँ यह फेंक दी जाती ग़ुबार[21]
ऐ फ़िदा हो तेरी राह में मेरा जिस्म ओ जानो दिल
मैं नहीं पाता कि तुझसा कोई करता हो प्यार....

1. काम बनाने वाला। 2. बुराई। 3. छुपाना। 4. ख़ुदा तआला। 5. उपकार करने वाला। 6. ख़ुदा (पालनहार)। 7. इहसान करने वाला। 8. शुक्रिया। 9. बुरा चाहने वाला। 10. परास्त। 11. अपमानित। 12. बदला। 13. प्यार तथा उपकार। 14. उपाधि, वस्त्र। 15. सानिध्व। 16. मिट्टी के कीड़े की तरह। 17. शर्म। 18. चौखट। 19. सेवक। 20.मुरादें पूरी करने वाला। 21. धूल

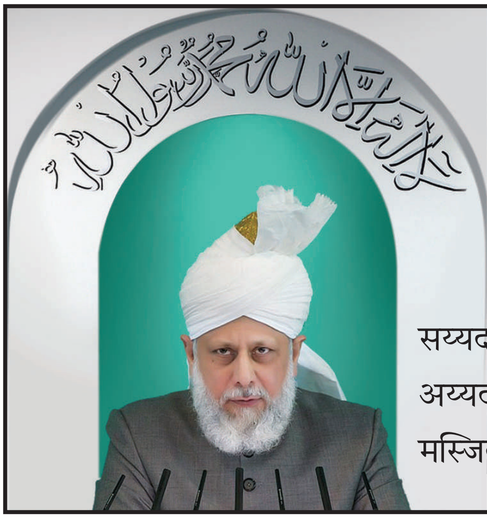

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 18.10.2024 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

मस्जिद फ़ज़ल लंदन की आधार शिला पर एक शताब्दी पूरी होने के हवाले से मस्जिद फ़ज़ल के इतिहास का संक्षिप्त बयान।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

कल यू.के. की जमाअत मस्जिद फ़ज़्ल के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष में एक आयोजन कर रही है जिसमें ग़ैर मुस्लिम मेहमान, पड़ौसी इत्यादि भी आमन्त्रित किए गए हैं। मस्जिद फ़ज़ल का एक ऐतिहासिक महत्त्व है, इस दृष्टि से कि यह अहमदिया जमाअत की पहली मस्जिद है जो ईसाईयत के गढ़ में बनाई गई थी और फिर यहाँ से इस्लाम की वास्तविक शिक्षा तथा तबलीग़ लोगों में विराट स्तर पर आरम्भ हुई। आज हमारे विरोधी कहते हैं कि अहमदिया जमाअत अंग्रेज़ों का अपना लगाया हुआ पौधा है, परन्तु आश्चर्य है कि आज स्वयं उनके लगाए हुए इस पौधे के द्वारा इन पश्चिम में रहने वाले लोगों की कमज़ोरियाँ उनके ही देश में प्रदर्शित करके इस्लाम के सौन्द्रय की तबलीग़ की जा रही है।

मस्जिद फ़ज़ल के निर्माण से पहले वोकिंग में एक मस्जिद बनाई गई थी और उसको बनाने वाले विख्यात पश्चिमी लेखक जो कि ऐशिया की भाषाओं से भली भांति परिचित एंव निपुण विद्वान, जी.डब्लू. लाईट्ज़ थे जो लाहौर में ओरेन्टियल कॉलिज के प्रिंसिपल के पद से रिटायर हुए तथा इंगलिस्तान वापस आकर 1889 में उन्होंने इस मस्जिद का निर्माण करवाया। यह भी अद्भुत संयोग है कि यह 1889 वही साल है जब अहमदिया मुस्लिम जमाअत की स्थाना हुई थी। 1889 में ही इन प्रोफ़ैसर साहब की मृत्यु हो गई तथा यूँ यह मस्जिद भी ताला लगने से बन्द हो गई। इस मस्जिद को संभालने वाला कोई नहीं था, फिर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. के ज़माने में ख़्वाजा कमालुद्दीन साहब यहाँ आए, उन्होंने इसको खुलवाने

की कोशिश की तथा वे सफल हो गए। उन्होंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. को लिखा कि अब इस मस्जिद का एक ट्रस्ट बनाया गया है जिसका निगरान मुझे बनाया गया है और फिर दोबारा इसमें इबादत शुरु हुई। जब यह मस्जिद खोली गई तो ख़्वाजा साहब के साथ हज़रत चौधरी मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहब रज़ी. भी उनके साथ वहाँ गए और नफ़लें अदा कीं तथा ख़ूब दुआएँ कीं।

उसके कुछ समय पश्चात हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने मुबल्लिग़ों को प्रेरित किया तथा फ़ंड कम होने के बावजूद चौधरी फ़तह मुहम्मद सियाल साहब रज़ी. को यहाँ भिजवाया गया। उन्होंने ख़्वाजा साहब के साथ यहाँ काम किया। फिर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. के निधन के पश्चात ख़्वाजा साहब ने ख़िलाफ़ते सानिय: (दूसरी ख़िलाफ़त) की बैअत नहीं की, चौधरी फ़तह मुहम्मद सियाल साहब रज़ी. उन्हें छोड़ कर दूसरी जगह चले गए। यह वोकिंग की मस्जिद थी, किन्तु यथावत् रूप से मुस्लिम सम्प्रदाय अथवा जमाअत की ओर से मस्जिद फ़ज़्ल ही है जो बनाई गई। नि:सन्देह आज इंगलिस्तान में भी, लंदन में भी तथा पश्चिमी देशों में भी मुसलमानों की अनेक मस्जिदें हैं परन्तु लंदन में मुसलमानों की पहली मस्जिद होने का सम्मान मस्जिद फ़ज़्ल को ही प्राप्त है।

अहमदिया जमाअत की यह ख़ूबी है कि उसकी मस्जिदें जमाअत के लोगों के चन्दों तथा क़ुर्बानियों से निर्मित होती हैं। अब तो इंगलिस्तान में भी जमाअत की दर्जनों मस्जिदें बन चुकी हैं। अतएव आज मस्जिद फ़ज़्ल के हवाले से मैं कुछ कहना चाहता हूँ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पश्चिम में इस्लाम के फैलने के बारे में बहुत कुछ बयान फ़रमाया है, यही चीज़ हमारी तबलीग़ी गतिविधियों का आधार है। एक स्थान पर आप अलै. फ़रमाते हैं कि पश्चिम की ओर से सूर्य का उदय होना यह अर्थ रखता है कि ये पश्चिमी देश जो पुराने ज़माने से अंधकार एवं आध्यात्मिक शिक्षा से वंचित हैं, सत्य के सूर्य से प्रकाशित किए जाएँगे।

अपना एक सपना बयान करते हुए आप अलै. ने फ़रमाया- मैंने देखा कि लंदन नगर में एक मिम्बर पर खड़ा हूँ तथा अंग्रेज़ीभाषा में तथा अत्यंत तर्कपूर्ण शैली में इस्लाम की सत्यता प्रकट कर रहा हूँ, बाद इसके मैंने बहुत से पक्षी पकड़े जो छोटे छोटे वृक्षों पर बैठे हुए थे तथा उनके रंग सफ़ेद थे, सो मैंने उसका स्वप्नफल यह निकाला कि यद्यपि मैं नहीं, किन्तु मेरे लेख इनमें फैल जाएँगे तथा अनेक सत्यनिष्ठ अंग्रेज़ सत्य का शिकार हो जाएँगे।

चौधरी फ़तह मुहम्मद सियाल साहब रज़ी. इंगलिस्तान के पहले यथावत् मुबल्लिग़ थे। उन्हें अल्लाह तआला ने यहाँ पहला फल भी प्रदान किया, तथा पहले अहमदी मिस्टर कोर्यो थे जो एक पत्रकार थे। उनके बाद लगभग एक दर्जन लोग अहमदिया जमाअत में दाख़िल हुए, फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने सियाल साहब को वापस बुला लिया तथा क़ाज़ी अब्दुल्लाह साहब रज़ी. को मुबल्लिग़ बनाकर भिजवाया गया। ये सहाबी भी थे और इन्होंने प्रथम विश्व युद्ध में यहाँ काम किया। इनके ज़माने में एक किराए का मकान भी लिया गया। 1917 से जनवरी 1920 तक हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ रज़ी. ने भी यहाँ मुबल्लिग़ के रूप में काम किया। 1919 में चौधरी फ़तह मुहम्मद सियाल साहब रज़ी. को पुन: तथा अब्दुर्रहीम नय्यर साहब

रज़ी. को मुबल्लिग़ के रूप में यहाँ भिजवाया गया, उन्होंने नि:स्वार्थ भावना से काम किया। 1920 में फ़तह मुहम्मद सियाल साहब रज़ी. को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने इरशाद फ़रमाया कि इंगलिस्तान में कोई जगह ख़रीदें जहाँ मस्जिद बनाई जाए। अत: दो हज़ार दो सौ पाउंड से अधिक धन राशि से यह जगह पटनी के इलाक़े में ख़रीदी गई।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. को जब यह सूचना मिली तो आप रज़ी. उस समय डलहौज़ी में थे। आप रज़ी. ने वहाँ एक बड़ा आयोजन किया तथा मस्जिद का नाम मस्जिद फ़ज़्ल रखा। फिर इस मस्जिद के निर्माण के लिए चन्दे की तहरीक की गई। 1924 में वैम्बले की अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी के लिए अब्दुर्रहीम नय्यर साहब रज़ी. को इस्लाम की शिक्षा बयान करने के लिए बुलाया गया तो उन्होंने क़ादियान को सूचना दी। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने इसको स्वीकार करते हुए इस्लाम की ख़ूबियाँ बयान करने के लिए एक किताब लिखी जो "अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम" के नाम से प्रकाशित हुई है।

इस कान्फ्रंस के लिए फ़ैसला हुआ कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. स्वयं इसमें शामिल हों। अतएव हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. दमिश्क़ तथा मिसर होते हुए, इटली, स्वीज़र लैंड तथा फ्रांस से होते हुए २२ अगस्त १९२४ को इंगलिस्तान पहुंचे। यहाँ सेन्टपॉल चर्च के सामने खड़े होकर आप रज़ी. ने अल्लाह तआला से इस्लाम की फ़तह की दुआ की और फिर आप रज़ी. नगर में दाख़िल हुए। आप रज़ी. के आगमन को यहाँ की प्रेस में विभिन्न कारणों से अत्यधिक कवरेज भी मिली।

मस्जिद के निर्माण के बारे में सबसे पहला चरण रुपए एकत्र करने का काम था। वह इस प्रकार हुआ कि युद्ध समाप्त होने के बाद एक ऐसा ज़माना आया कि पाउंड का स्तर गिरना शुरु हुआ तथा इस अवसर पर १९२० में हुज़ूर रज़ी. के इरशाद पर पहले तीस हज़ार तथा उसके पश्चात एक लाख रुपए जमा करने की तहरीक की गई। जमाअत के लोगों ने इस तहरीक पर पूर्णत: लब्बैक कहा। बैंक ऑफ़ इंडिया के द्वारा यह धन राशि इंगलिस्तान भिजवाई गई तथा इस धन राशि से तीन हज़ार चार सौ अड़सठ पाउंडज़ ख़रीदे गए।

19 अक्तूबर 1924 इतवार के दिन इस मस्जिद की आधार शिला रखी गई। इस समारोह में सम्मिलित होने के लिए पार्लिमान के मेम्बर, लीडज़ऱ्, राजनेता, दूतावास के कार्य-कर्ताओं सहित अनेक लोगों को निमन्त्रण पत्र भेजे गए थे, समय कम था इस लिए लगता था कि थोड़े से लोग आएँगे, परन्तु मेहमानों की बड़ी संख्या इस समारोह में शामिल हुई। विभिन्न देशों के लोग भी इस आयोजन में शामिल हुए तथा यह आयोजन अत्यंत सफल रहा। आधार शिला रखने के आयोजन के शुरु में हज़रत हाफ़िज़ रोशन अली साहब रज़ी. ने तिलावत की। इसके बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी. ने सम्बोधन फ़रमाया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने फ़रमाया कि क़ुर्आन करीम के आदेश तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अमल से साबित है कि इस्लाम की मस्जिदों का द्वार हर उस व्यक्ति के लिए खुला है जो ख़ुदा तआला की इबादत करना चाहे तथा इस्लाम की मस्जिदें विभिन्न धर्मों के लोगों को संयुक्त करने

का केन्द्र बिन्दु हैं। इन्हीं भावनाओं के साथ हम अर्थात अहमदिया जमाअत ने इस मस्जिद के निर्माण का निश्चय किया है। फ़रमाया- इससे पहले कि मैं इस मस्जिद की आधार शिला रखूँ, मैं इस बात की घोषणा करना चाहता हूँ कि मस्जिद केवल तथा केवल ख़ुदा तआला की इबादत के लिए बनाई जाती है।

मस्जिद की आधार शिला रखे जाने के दो साल बाद इस मस्जिद का उद्घाटन हुआ। उद्घाटन करने शहज़ादा फैसल ने आना था उनके पिता जी ने उन्हें कहा था कि वे जाएँ, किन्तु मुसलमानों की प्रतिक्रिया के कारण बादशाह ने उनको रोक दिया और शेख़ अब्दुल क़ादिर साहब ने इसका उद्घाटन किया तथा उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में बताया कि मैं अहमदी नहीं हूँ, किन्तु चूँकि हम इस्लाम की सेवा करना चाहते हैं इसलिए हमें मतभेद से ऊपर उठ कर एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए। यह शेख़ अब्दुल क़ादिर साहब का साहस एवं खुला दिल था, अल्लाह तआला इसका भी उन्हें अच्छा बदला अता फ़रमाए।

यह मस्जिद फ़ज़ल का संक्षिप्त इतिहास है जो मैंने बयान किया है और यही इस मस्जिद के निर्माण का कारण था कि पश्चिम में इस्लाम की तबलीग़ हो।

आज हम सौ साल पूरे होने पर समारोह का आयोजन कर रहे हैं किन्तु यह कोई सांसारिक समारोह नहीं है। मस्जिद वह स्थान है जहाँ अल्लाह तआला की इबादत के लिए लोग जमा हों, अपनी रूहानी उन्नति भी करें, अपने नैतिक आचरण भी बुलन्द करें।

आज हमें इस बात की कोशिश करनी चाहिए कि हम अल्लाह तआला की इबादत का हक़ अदा करने वाले बनें, अल्लाह तआला के आदेशानुसार चलने वाले हों, उसके प्राणियों का हक़ अदा करने वाले बनें। यदि ऐसा होगा तोा को अमन व सलामती का गहवारा बनाने वाले होंगे। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ दे। आमीन

☆ ☆ ☆

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

इस्लाम का जीवित होना हम से एक फ़िदिया (क़ुरबानी) मांगता है। वह क्या है? हमारा इसी मार्ग में मरना।

अनुवादक : सय्यद मोहियुद्दीन फरीद

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम 1890 ई में जमात अहमदिया की स्थापना के साथ अपनी एक पुस्तक "फतह इस्लाम" में लिखते हैं :

"हे समझदार लोगो ! तुम इस से आश्चर्य मत करो कि ख़ुदा तआला ने इस ज़रूरत के समय में और इस घोर अंधकार के दिनों में एक आसमानी प्रकाश भेजा और एक बंदे का सार्वजनिक भलाई के लिए चयन करके इस्लाम का नाम ऊँचा करने, हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) को प्रकाश फैलाने और मुसलमानों की सहायता के लिए, इसी प्रकार उन की अन्दरूनी हालत को साफ करने के इरादे से संसार में भेजा। हैरानी तो इस में होती कि वह ख़ुदा जो इस्लाम धर्म का समर्थक है, जिसने वादा किया था कि मैं सदा क़ुर्आन की शिक्षा का संरक्षक रहूँगा और इसे प्रभावहीन, मलिन और प्रकाशहीन नहीं होने दूँगा, वह इस अंधेरे को देख कर और इन अन्दरूनी और बैरूनी फसादों पर दृष्टि डाल कर चुप रहता और अपने उस वायदे को याद न करता जिसको अपनी पवित्र वाणी में पक्के तौर पर वर्णन कर चुका था। फिर मैं कहता हूँ कि यदि अश्चर्य की जगह थी तो यह थी कि उस पाक रसूल की यह साफ और स्पष्ट भविष्यवाणी व्यर्थ जाती जिस में फर्माया गया था कि प्रत्येक शताब्दी के प्रारम्भ में ख़ुदा तआला एक ऐसे भक्त को पैदा करता रहेगा कि जो उस के धर्म का सुधार करेगा। अत: यह आश्चर्य की बात नहीं अपितु हज़ारों धन्यवाद का स्थान और ईमान और आस्था के बढ़ाने का समय है। ख़ुदा तआला ने अपने फ़ज़्ल और कृपा से अपने वायदे को पूरा कर दिया और अपने रसूल की भविष्यवाणी में एक मिनट का भी अन्तर नहीं आने दिया। न केवल इस भविष्यवाणी को पूरा करके दिखाया अपितु भविष्य के लिए भी हज़ारों भविष्यवाणियों और चमत्कारों का दरवाज़ा खोल दिया। यदि तुम ईमानदार हो तो शुक्र करो और शुक्र के सज्दे करो कि वह ज़माना जिसकी प्रतीक्षा करते-करते तुम्हारे पूर्वज मृत्यु को प्राप्त कर गये और अनगिनत आत्माऐं उसकी चाहत में ही प्रस्थान कर गईं। वह समय तुम ने पा लिया। अब इस की कद्र करना अथवा न करना और इस से लाभ उठाना अथवा न उठाना तुम्हारे हाथ में है। मैं इसका बार-बार वर्णन करूँगा और इसकी चर्चा से मैं रुक नहीं सकता कि मैं वही हूँ जो यथा समय पर मानवजाति के सुधार के लिए भेजा गया। ताकि धर्म को ताज़ा तौर पर दिलों में क़ायम कर दिया जाये। मैं उसी प्रकार भेजा गया हूँ जिस प्रकार से वह व्यक्ति कलीमुल्लाह मर्दे ख़ुदा (अर्थात हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम) के बाद भेजा गया था जिसकी आत्मा हेरोडेस के शासनकाल में बहुत कष्ट उठाने के बाद आसमान की ओर उठाई गई। अत: जब दूसरा कलीमुल्लाह जो वास्तव में सब से पहला और नबियों का सरदार है दूसरे फिरऔन का सर कुचलने के लिए आया, जिस के बारे में है

(अलमुज़्ज़म्मिल:16) اِنَّآ اَرۡسَلۡنَآ اِلَيۡكُمۡ رَسُوۡلًا ۙ شَاهِدًا عَلَيۡكُمۡ كَمَاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ رَسُوۡلًا

(अर्थात:- हम ने तुम्हारी ओर एक ऐसा रसूल भेजा है जो तुम पर निगरान है उसी तरह जिस तरह हम ने फिरऔन की तरफ रसूल भेजा था। -अनुवादक) अत: उसको भी जो अपनी कार्यवाहियों में प्रथम कलीम (अर्थात-हज़रत मूसा अ.) के अनुरूप परन्तु प्रतिष्ठा में उस से महान् था, एक मसीह के अनुरूप (पुरुष) का वादा दिया गया और वह मसीह का अनुरूप मरियम पुत्र मसीह की शक्ति और स्वभाव तथा गुण पाकर उसी ज़माना की भाँति और उसी समय के निकट जो पहले कलीम के ज़माना से मरियम पुत्र मसीह के ज़माना तक था अर्थात चौदहवीं शताब्दी में आसमान से उतरा। वह उतरना आध्यात्मिक रूप में था जैसा कि परम सिद्ध लोगों का उत्थान के बाद मानवजाति के सुधार के लिए अवतरण होता है और सब बातों में उसी ज़माना के अनुरूप ज़माना में उतरा जो मरियम पुत्र मसीह के उतरने का ज़माना था ताकि समझने वालों के लिए निशान हो। अत: प्रत्येक को चाहिए कि इस से इन्कार करने में जल्दी न करे ताकि ख़ुदा तआला से लड़ने वाला न ठहरे। संसार के लोग जो अंधविश्वास और अपने परम्परागत विचारों पर जमे हुए हैं वे इसको स्वीकार नहीं करेंगे परन्तु अति शीघ्र ही वह समय आने वाला है जो उनकी भूल उन पर स्पष्ट कर देगा। दुनिया में एक नज़ीर (सतर्क करने वाला) आया परन्तु दुनिया ने उसको स्वीकार नहीं किया परन्तु ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े ज़ोरदार आक्रमणों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा। यह मनुष्य की बात नहीं ख़ुदा तआला की ईशवाणी और प्रतापी पालनहार की वाणी है और मैं विश्वास रखता हूँ कि उन आक्रमणों के दिन निकट हैं। परन्तु ये आक्रमण तलवार और तीर से नहीं होंगे तथा तलवारों और बन्दूकों की आवश्यकता नहीं पड़ेगी अपितु आध्यात्मिक शस्त्रों के साथ ख़ुदा तआला की सहायता उतरेगी और यहूदियों से घोर युद्ध होगा। वे कौन हैं? इस ज़माना के ज़ाहिर परस्त लोग जिन्होंने सामूहिक सहमति से यहूदियों के क़दम पर क़दम रखा है। उन सब को अल्लाह की आसमानी तलवार दो टुकड़े करेगी और यहूदियत का स्वभाव मिटा दिया जाएगा प्रत्येक सत्य को छुपाने वाला दज्जाल (धोखेबाज़), दुनिया परस्त, एक आँखवाला जो धर्म की आँख नहीं रखता स्पष्ट अटल सबूत की तलवार से वध किया जायेगा, सच्चाई की जीत होगी और इस्लाम के लिए फिर ताज़गी और प्रकाश पूर्ण दिन आयेगा जो पहले ज़माने में आ चुका है, वह सूरज अपने पूरे प्रताप के साथ फिर चढ़ेगा जैसा कि पहले चढ़ चुका है। परन्तु अभी ऐसा नहीं, ज़रूर है कि आसमान उसे चढने से रोके रहे जब तक कि परिश्रम और अनथक लगन से हमारे जिगर ख़ून न हो जायें, और हम सारे आरामों को उसके प्रकट करने के लिए न त्याग दें और इस्लाम के सम्मान के लिए सारे अपमान स्वीकार न कर लें। इस्लाम का जीवित होना हम से एक फ़िदिया (क़ुरबानी) मांगता है। वह क्या है? हमारा इसी मार्ग में मरना। यही मृत्यु है जिस पर इस्लाम का जीवन, मुसलमानों का जीवन और जीवित ख़ुदा का प्रकटन निर्भर है और यही वह चीज़ है जिस का दूसरे शब्दों में इस्लाम नाम है। ख़ुदा तआला अब इसी इस्लाम को जीवित करना चाहता है। ज़रूर था कि वह इस महान् अभियान को सफल करने के लिए एक महानतम कारख़ाना जो प्रत्येक दृष्टिकोण से प्रभावपूर्ण हो अपनी ओर से स्थापित करता। अत: उस परम बुद्धिमान और परम शक्तिशाली (अल्लाह) ने इस विनीत

को प्रजा के सुधार के लिए भेज कर ऐसा ही किया और दुनिया को सत्य की ओर खींचने के लिए सत्य के समर्थन और इस्लाम के प्रचार कार्य को कई शाखाओं पर विभाजित कर दिया। अत: उन शाखाओं में से एक शाखा लेखन और सम्पादन का क्रम है जिसकी व्यवस्था इस विनीत के सुपुर्द की गई तथा वे आध्यात्म ज्ञान और तत्वज्ञान सिखलाऐ गए जो मनुष्य के सामर्थ्य से नहीं अपितु केवल ख़ुदा तआला की शक्ति से ज्ञात हो सकते हैं और मानवीय प्रयत्न से नहीं अपितु रूहुलक़ुदुस (पवित्र आत्मा) की शिक्षा से कठिनाईयों का समाधान कर दिया गया।

दूसरी शाख़ा इस कारख़ाने का विज्ञापन जारी करने का कार्यक्रम है जो अल्लाह के आदेशानुसार विवाद की पूर्णता के उद्देश्य से जारी है। और अब तक बीस हज़ार से कुछ अधिक विज्ञापन इस्लामी सबूतों के दूसरी क़ौमों पर सिद्ध करने के लिए प्रकाशित हो चुके हैं और भविष्य में आवश्यकतानुसार सदा होते रहेंगे।

तीसरी शाखा इस कारख़ाने की अतिथि और मुसाफिर और सत्य की खोज के लिए यात्रा करने वाले और दूसरे विभिन्न उद्देश्यों से आने वाले हैं जो इस आसमानी कारख़ाना की सूचना पाकर अपनी अपनी नीयतों की प्रेरणा से भेंट करने के लिए आते रहते हैं। यह शाख़ा भी निरन्तर प्रगति पर है। यद्यपि कुछ दिनों में थोड़े कम परन्तु कुछ दिनों में अत्यधिक जोश से इसका क्रम आरम्भ हो जाता है। अतएव इन सात वर्षों में साठ हज़ार से कुछ अधिक अतिथि आये होंगे। और जितना उनमें से सचेत लोगों को भाषण द्वारा आध्यात्मिक लाभ पहुँचाया गया और उनकी कठिनाइयाँ दूर कर दी गईं और उन की कमज़ोरी को दूर कर दिया गया इसका ज्ञान ख़ुदा तआला को है, परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि ये ज़ुबानी भाषण जो प्रश्न करने वालों के प्रश्नों के उत्तर में दिए गये अथवा दिए जाते हैं अथवा अपनी ओर से समय और परिस्थिति के अनुसार कुछ वर्णन किया जाता है। यह प्रक्रिया कुछ परिस्थितियों में लेख इत्यादि से अधिक लाभदायक, प्रभावी और शीघ्रता से दिलों में बैठने वाली प्रमाणित हुई है। यही कारण है कि सभी नबी इस शैली को अपनाते रहे हैं और ख़ुदा तआला की वाणी के सिवा जो विशेष रूप से अपितु लिखित तौर पर प्रकाशित की गई शेष जितने भी नबियों के कथन हैं वे अपने अपने समय में भाषणों की भाँति प्रसारित होते रहे हैं। नबियों का सामान्य नियम यही था कि एक अनुभवी लेक्चरार की भाँति आवश्यकतानुसार विभिन्न सभाओं और समारोहों में उनकी वर्तमान परिस्थियों के अनुकूल आत्मा से शक्ति प्राप्त करके भाषण दिया करते थे। परन्तु न इस युग के वक्ताओं की भाँति जो अपने भाषणों से केवल अपना ज्ञान प्रदर्शन करना चाहते हैं अथवा यह उद्देश्य होता है कि अपने झूठे दर्शन और तथ्य रहित तर्कों से किसी भोले भाले को अपने पेच में लायें और फिर अपने से अधिक नर्क के योग्य बनायें। अपितु नबी अत्यन्त सरल वाक्य प्रकट करते और जो दिल से निकलता था वह दूसरों के दिलों में डालते थे। उनकी पवित्र वाणी ठीक परिस्थिति और आवश्यकता के समय पर होती थी और सुनने वालों को मनोविनोद और कहानियों की भाँति कुछ नहीं सुनाते थे अपितु उनको बीमार देखकर और भिन्न-भिन्न आध्यात्मिक रोगों में ग्रस्त पाकर उपचार के रूप में उनको उपदेश देते थे, अथवा स्पष्ट तर्कों से उनका सन्देह दूर करते थे। उनके

वार्तालाप में बातें कम और अर्थ अधिक होते थे। अत: यही शैली यह विनीत प्रयोग में लाता है और अतिथियों और मुसाफिरों की योग्यता के अनुसार और उनकी आवश्यकता के आधार पर और उनके रोगों को ध्यान में रख कर सदैव भाषण का द्वार खुला रहता है क्योंकि बुराई को निशाना करके उसके रोकने के लिए आवश्यक उपदेशों के तीर चलाना और बिगड़े हुए स्वभाव को ऐसे अंग की तरह पाकर उसे अपनी वास्तविक अवस्था और स्थान पर लाना- जिस प्रकार यह उपचार रोगी के सामने लाने पर सोचा जा सकता है और दूसरे किसी प्रकार से पूर्ण सम्भव नहीं। यही कारण है कि ख़ुदा तआला ने कई हज़ार नबी और रसूल भेजे और उनकी संगत प्राप्त करने का आदेश दिया ताकि प्रत्येक युग के लोग आखों देखा आदर्श पाकर और उनके व्यक्तित्व को अल्लाह की वाणी का जीवन्त रूप देख कर उनके अनुसरण के लिए प्रयास करें। यदि नेकों की संगत में रहना धर्म में अनिवार्य न होता तो ख़ुदा तआला अपनी वाणी को रसूलों और नबियों को भेजे बिना ही और ढंग से भी उतार सकता था अथवा केवल प्रारम्भिक काल में ही रिसालत (अल्लाह का पैग़ाम) की बात को सीमित रखता और बाद में सदा के लिए नुबुव्वत और रिसालत और वह्यी (ईशवाणी) का क्रम समाप्त कर देता परन्तु ख़ुदा तआला के परमज्ञान और बुद्धिमत्ता ने कदाचित ऐसा स्वीकार नहीं किया और आवश्यकता के समय में अर्थात जब कभी अल्लाह के प्रति प्रेम और अल्लाह की उपासना और संयम और पवित्रता इत्यादि अनिवार्य बातों में कमी आती रही है पवित्र लोग ख़ुदा तआला से वह्यी पाकर आदर्शरूप में संसार में आते रहे हैं और ये दोनों मामले अनिवार्य हैं। यदि ख़ुदा तआला को सदा के लिए मानवजाति के सुधार की ओर ध्यान है तो यह भी अत्यन्त आवश्यक है कि ऐसे लोग भी सदा के लिए आते रहें कि जिन को ख़ुदा तआला ने अपनी विशेष कृपा से ज्ञानदृष्टि प्रदान की हो और अपनी इच्छा के पथ पर कायम रखा हो। नि:सन्देह यह बात विश्वसनीय और सर्वमान्य विषय में से है कि यह मानवजाति के सुधार का असाधारण कार्यभार केवल कागज़ों के घोड़े दौड़ाने से ही सम्पन्न नहीं हो सकता। इसके लिए उसी मार्ग पर चलना ज़रूरी है जिस पर प्रारम्भ से ख़ुदा तआला के पवित्र नबी चलते आये हैं और इस्लाम ने अपना क़दम रखते ही इस प्रभावपूर्ण व्यवस्था को ऐसी दृढ़ता और सशक्त रूप में जारी रखा है कि इसका उदाहरण दूसरे धर्मों में कदापि नहीं पाया जाता। कौन इस बड़ी जमाअत का दूसरी जगह अस्तित्व दिखा सकता है जो संख्या में दस हज़ार से भी अधिक बढ़ गई थी और आस्था, निष्ठा, विनीतता, कठोर परिश्रम, पूर्ण लगन से सत्य की प्राप्ति के लिए और सच्चाई को जानने के लिए नबी की चौखट पर दिन रात पड़ी रहती थी। नि:सन्देह हज़रत मूसा को भी एक जमाअत मिली थी परन्तु वह कैसी और कितनी अवज्ञाकारी और विद्रोही और आध्यात्मिक संगत साधना और सत्य पर कायम रहने से वंचित थी। इस बात को बाइबल के पढ़ने और यहूदियों के इतिहास पर दृष्टि डालने वाले भली-भांति जानते हैं परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जमाअत ने अपने प्रिय रसूल के मार्ग में ऐसी एकता और आध्यात्मिक एकरूपता पैदा कर ली थी कि इस्लामी भाई-चारा की दृष्टि से वास्तव में एक शरीर की भाँति हो गई थी और उनके दैनिक व्यवहार और जीवनशैली और अन्दर और बाहर में नुबुव्वत के प्रकाश ऐसे रच गये थे कि मानो वे सभी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम के प्रतिबिम्ब स्वरूप थे। अत: यह महान चमत्कार आन्तरिक बदलाव का जिस के द्वारा घोर मूर्ति पूजक अल्लाह के पूर्ण आराधक बन गये और नित्य सांसारिक बातों में मगन रहने वाले सच्चे ख़ुदा से ऐसा सम्बंध स्थापित कर गये कि उस के मार्ग में पानी की भाँति अपने रक्त बहा दिए। यह वस्तुत: एक सच्चे और सम्पूर्ण नबी की सँगत में निष्ठापूर्वक जीवनयापन करने का परिणाम था। अत: इसी कारण यह विनीत इस क्रम को क़ायम रखने के लिए नियुक्त किया गया है और चाहता है कि संगत में रहने वालों का क्रम और भी अधिक विस्तार के साथ बढ़ा दिया जाये और ऐसे लोग दिन रात संगत में रहें कि जो ईमान, प्रेम और विश्वास के बढ़ाने के लिए शौक रखते हों और उन पर वे प्रकाश प्रकट हों कि जो इस विनीत पर प्रकट किए गये हैं और वह आनन्द उनको मिले जो इस विनीत को प्रदान किया गया है ताकि इस्लाम का प्रकाश विस्तारपूर्वक संसार में फैल जाये और घृणा और अपमान का काला दाग़ मुसलमानों के माथे से धोया जाये। इसी की ख़ुशख़बरी देकर ख़ुदा तआला ने मुझे भेजा और कहा कि बख़राम कि वक़्त तू नज़दीक रसीद व पाए मुहम्मदियाँ बर मनार बुलंद तर मुहकम उफ़ताद। अर्थात धन्य हो कि तेरा समय निकट आ गया है और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पैर ऊँचे मीनार पर दृढ़तापूर्वक जम गये हैं।

चौथी शाखा इस कारख़ाने की, वे पत्र हैं जो सच्चाई के अभिलाषी अथवा विरोधियों के नाम लिखे जाते हैं। अतएव अब तक उपर्युक्त अवधि में नब्बे हज़ार से भी कुछ अधिक पत्र आये होंगे जिनका उत्तर लिखा गया सिवाए कुछ पत्रों के जो निरर्थक और अनावश्यक समझे गये और यह क्रम भी नियमित रूप से जारी है और प्रत्येक महीने में प्राय: तीन सौ से सात सौ अथवा हज़ार तक पत्रों का आदान प्रदान हो जाता है।

पाँचवीं शाखा इस कारख़ाने की जो ख़ुदा तआला ने अपनी विशेष वह्यी और इल्हाम (ईशवाणी) द्वारा स्थापित की, अनुयायियों और बैअत करने वालों का क्रम है। अतएव उसने इस जमात के स्थापित करने के समय मुझे फ़रमाया कि धरती में पथभ्रष्टता का तूफ़ान उठा है तू इस तूफ़ान के समय में यह नौका निर्माण कर। जो व्यक्ति इस नौका में सवार होगा वह डूबने से बचाया जायेगा और जो इन्कार करेगा उसके लिए मृत्यु अनिवार्य है और फ़रमाया कि जो व्यक्ति तेरे हाथ में हाथ देगा उसने तेरे हाथ में नहीं अपितु ख़ुदा तआला के हाथ में हाथ दिया और उस ख़ुदावन्द ख़ुदा ने मुझे ख़ुशख़बरी दी कि मैं तुझे मृत्यु दूंगा और अपनी ओर उठाऊँगा परन्तु तेरे सच्चे अनुयायी और निष्ठावान प्रलय (क़यामत) के दिन तक रहेंगे और सदा इन्कार करने वालों पर उन्हें विजय प्राप्त रहेगी।

यह पाँच प्रकार का कार्यक्रम है जो ख़ुदा तआला ने अपने हाथ से क़ायम किया। यद्यपि एक ऊपरी दृष्टि रखने वाला व्यक्ति केवल प्रकाशन के कार्य को ज़रूरी समझेगा और दूसरी शाखाओं को अनावश्यक और बेफायदा समझेगा परन्तु ख़ुदा तआला की दृष्टि में ये सारे ज़रूरी हैं। और जिस सुधार के लिए उसने इच्छा रखी है वह सुधार इन पाँचों प्रक्रियाओं के बिना सम्भव नहीं हो सकता।"

(फतह इस्लाम पृष्ठ 6-22)

दावा मुस्लेह मौऊद के संबंध में वैभवशाली घोषणा

(हज़रत खलीफ़ा सानी रज़िअल्लाहु अन्हु की क़लम से)

(20 फ़रवरी 1944 ई. स्थान होशियारपुर)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह अन्हो फरमाते हैं :

जैसा कि आप लोगों ने सुना है आज से पूरे 58 वर्ष पूर्व जिसे आज 59 वां वर्ष शुरू हो रहा है 20 फ़रवरी के दिन 1886 ई. में इसी शहर होशियारपुर में इस मकान में जो कि मेरी उंगली के सामने है एक ऐसे मकान में जो उस समय तवेला कहलाता था जिसका अर्थ यह है कि वह वास्तविक निवास स्थान नहीं था, बल्कि एक अमीर व्यक्ति के कई सारे मकानों में से एक वह मकान था जिस में शायद कोई अतिथि संयोगवश ठहर जाता हो या वहां उन्होंने स्टोर बना रखा हो या आवश्यकता अनुसार जानवर बांधे जाते हों, क़ादियान का एक गुमनाम व्यक्ति जिसे स्वयं क़ादियान के लोग भी पूरी तरह नहीं जानते थे, लोगों के इस विरोध को देख कर जो इस्लाम तथा इस्लाम के संस्थापक से वह रखते थे अपने ख़ुदा के समक्ष अकेले में इबादत (उपासना) करने और उसकी सहायता तथा उसके समर्थन का निशान (चिन्ह) मांगने के लिए आया और चालीस दिन उसने लोगों से अलग हो कर अपने ख़ुदा से दुआएं माँगी। चालीस दिन की दुआओं के पश्चात् ख़ुदा ने उसको एक निशान (प्रतीक) दिया। वह निशान यह था कि मैं न केवल वह वचन जो मैंने तुम से किए हैं पूरा करूंगा और तुम्हारे नाम को दुनिया के किनारों तक पहुंचाऊँगा अपितु इस वचन को शानदार ढंग से पूरा करने के लिए मैं तुम्हें एक पुत्र दूंगा जो विशेष गुणों से संपन्न होगा। वह इस्लाम को दुनिया के किनारों तक फैलाएगा, इल्हाम के मआरिफ़ (रहस्य) लोगों को समझाएगा, दया और अनुग्रह का प्रतीक होगा तथा वे धार्मिक तथा सांसारिक ज्ञान जो इस्लाम के प्रचार के लिए आवश्यक हैं उसे प्रदान किए जाएंगे। इसी प्रकार अल्लाह तआला उसे लम्बी आयु प्रदान करेगा यहां तक कि वह दुनिया के किनारों तक प्रसिद्धी प्राप्त करेगा।

जमात अहमदिया के संस्थापक ने यह घोषणा यहीं से की और उस समय की जबकि वह अभी इस सिलसिले के संस्थापक नहीं थे और जमाअते अहमदिया की अभी स्थापना भी नहीं हुई थी। क़ादियान एक छोटी सी बस्ती (क़स्बा) थी और अभी भी वह होशियारपुर से एक तिहाई है। होशियारपुर की आबादी चालीस हज़ार है और क़ादियान की आबादी चौदाह पंद्राह हज़ार लेकिन जिस समय वह यहाँ आए हैं उस समय क़ादियान की आबादी 18 सौ कस की थी और जहां तक सांसारिक सम्मान का संबंध है इस रूप से आपको किसी प्रकार का सम्मान प्राप्त नहीं था। इसमें कोई संदेह नहीं कि आपका परिवार एक सम्मानित परिवार था इसमें कोई संदेह नहीं कि मुग़ल साम्राज्य के दौरान इस ख़ानदान को अति सम्मानित दृष्टि से देखा जाता था और इसमें कोई संदेह नहीं कि महाराजा रणजीत सिंह के शासनकाल में भी इस ख़ानदान के कुछ लोग प्रतिष्ठित पदों पर आसीन

रहे हैं लेकिन इस काल में यह ख़ानदान अपना प्राचीन सम्मान खो चुका था और किन्हीं कारणों से इसकी अधिकांश संपत्ति ज़ब्त हो चुकी थी। अतः उस युग में सांसारिक दृष्टि से उनकी स्थिति एक मामूली ज़मींदार के जैसी थी और उन्हें अपना मान-सम्मान बढ़ाने की कोई इच्छा भी नहीं थी। पिता जी ने उन्हें बार-बार ध्यान दिलाया कि वह कोई स्थायी नौकरी कर लें किन्तु उन्होंने इन्कार कर दिया। ऐसा व्यक्ति उस युग में यह घोषणा करता है कि अल्लाह तआला मेरे माध्यम से दुनिया में इस्लाम का प्रसार करेगा और फिर मेरे काम को लम्बा करने के लिए मुझे एक विशेष पुत्र प्रदान करेगा क्योंकि यह अति भ्रष्टाचार (दंगो) का युग है और इस भ्रष्टाचार के सुधार के लिए एक दीर्घकालिक संघर्ष की आवश्यकता है। और वह समय नहीं रहा जब फैसले (निर्णय) युद्ध और लड़ाई द्वारा हो जाते थे बल्कि अब फ़ैसले तर्क-वितर्क और लम्बी बहस के बाद होते हैं और इस काम में काफ़ी समय लगता है। अतः चूंकि वर्तमान युग के सुधार के लिए एक लम्बे समय की आवश्यकता थी इसलिए अल्लाह तआला ने आपको सूचित किया कि वह आपको एक पुत्र देगा और जैसे कि कुछ अन्य ख़बरों में इसका वर्णन है अल्लाह तआला ने आपको यह भी बताया कि वह पुत्र ९ वर्ष में पैदा होगा, तुम्हारा उत्तराधिकारी होगा और इन गुणों से युक्त होगा।

यह इतनी ज़बरदस्त ख़बर है कि कोई व्यक्ति जो अपने दिल में ईमानदारी का माद्दा रखता हो इसके पूरा होने का इन्कार नहीं कर सकता और उसे स्वीकार करना पढ़ता है कि यह सूचना ख़ुदा की ओर से ही थी किसी व्यक्ति के नियंत्रण में नहीं था कि वह ऐसी सूचना दे सकता।

पहले तो कोई कह नहीं सकता कि वह स्वयं भी जीवित रहेगा या नहीं। फिर यदि वह जीवित भी रहे तो यह नहीं कह सकता कि उसका पुत्र पैदा होगा। फिर यदि पुत्र का जन्म हो तो वह यह नहीं कह सकता कि वह अवश्य जीवित रहेगा और लम्बी आयु प्राप्त करेगा। फिर यदि वह स्वयं जीवित भी रहे और उसका पुत्र भी जीवित रहे तो कोई व्यक्ति नहीं कह सकता कि किसी समय उसे इतना सम्मान (श्रेष्ठता) प्राप्त हो जाएगा कि उसके उत्तराधिकारी निर्धारित हुआ करेंगे। फिर यदि किसी को इतना सम्मान मिल भी जाए कि उसके उत्तराधिकारी नियुक्त हो जाएं तो कोई नहीं कह सकता कि कथित रूप से उसका पुत्र उत्तराधिकारी होगा। फिर यदि किसी का पुत्र उत्तराधिकारी बन भी जाए तो कोई नहीं कह सकता कि वह पृथ्वी के किनारों तक प्रसिद्धि प्राप्त करेगा और क़ौमें उस से बरकत (आशीर्वाद) प्राप्त करेंगी। अतः इस भविष्यवाणी पर जितना अधिक ध्यान दिया जाए उतनी ही इसकी महानता और महत्व प्रकट होता है और मनुष्य को यह मानना पढ़ता है कि यह सारी बातें ऐसी हैं जिनको पूरा करना कदापि किसी मनुष्य के नियंत्रण में नहीं था।

कौन व्यक्ति है जो यह कह सके कि मैं इतना समय अवश्य जीवित रहूंगा। फिर कौन है जो कह सकता है कि मेरा पुत्र होगा। फिर कौन है जो कह सकता है कि ९ वर्ष की अवधि में वह पुत्र जन्म लेगा। फिर कौन कह सकता है कि कुछ समय में इतनी महानता (प्रभुत्व) प्राप्त कर लूंगा कि संसार में मेरे उत्तराधिकारी नियुक्त किए जाएंगे। फिर कौन कह सकता है कि मेरा पुत्र ही एक समय

मेरा ख़लीफ़ा और उत्तराधिकारी नियुक्त होगा। फिर कौन कह सकता है कि मेरे पुत्र के समय में इस्लाम सारे विश्व में फैल जाएगा और इसके विश्व पर प्रभुत्व स्थापित करने की सामग्रियाँ उत्पन्न हो जाएंगी। यह इतने संकेत एक भविष्यवाणी में इकट्ठा हैं कि किसी मनुष्य की शक्ति में नहीं था कि वह अपनी ओर से ऐसी भविष्यवाणी कर सकता और फिर दुनिया में ऐलान द्वारा कहे कि यह भविष्यवाणी एक दिन अवश्य पूरी होगी लेकिन यह भविष्यवाणी जो आज से अठावन वर्ष पूर्व की गई थी पूरी हुई और बड़ी शान और महिमा के साथ पूरी हुई।

1882 ई. में जब जमात अहमदिया के संस्थापक ने यह पेशगोई प्रकाशित की उस समय आपका कोई मुरीद (शिष्य) नहीं था। आपकी स्थिति एक व्यक्ति की थी। इसके बाद 1887 ई. मैं आपके यहां एक पुत्र का जन्म हुआ जिसकी 1888 ई. में मृत्यु हो गई। आपने उस लड़के के बारे में कहीं भी यह नहीं लिखा था कि यह वही लड़का है जिसके बारे में अल्लाह तआला ने मुझे बताया है कि वह दुनिया के किनारों तक प्रसिद्धि पाएगा और क़ौमें उस से बरकत (आशीष) प्राप्त करेंगी लेकिन उस लड़के की मृत्यु पर लोगों ने इतना शोर मचाया कि जिस लड़के के बारे में इतने बड़े दावे किए गए थे, वह जीवित ही नहीं रहा और आख़िरकार यह शोर इतना बढ़ गया कि उस समय जो आपके साथी थे वह भी आपको छोड़ कर चले गए। वह लोग आपके मुरीद (अनुयायी) नहीं थे केवल आपसे मिलने वाले और आपके प्रति निष्ठा रखने वाले थे लेकिन उस लड़के की मत्यु पर वह भी संकट में आ गए और आपको छोड़ कर चले गए। ऐसी गंभीर स्थिति में जब लोगों के लिए संकट जैसा समय था और जब अपने भी आपको छोड़ कर भाग रहे थे आपने अल्लाह तआला के आदेश के तहत दुनिया में यह ऐलान फ़रमाया कि ख़ुदा ने मुझे आदेश दिया है कि तू लोगों से बैअत ले और एक आध्यात्मिक जमात स्थापिक कर। लोग ऐसे संकट के समय इतना भयभीत हो जाते हैं कि उनके होश भी ठिकाने नहीं रहते परन्तु चूंकि वह मौऊद था इसलिए जब लोग हंस रहे थे कि पेशगोई झूठी निकली ऐसे संकट तथा इन्कार के समय में उसने अहमदिय्यत की नींव रखी और लोगों से बैअत लेने की घोषणा की। यह घोषणा आपने 1888 ई. के अंत में फ़रमाई और 1889 ई. में पेशगोई के अनुसार आपके घर एक पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम आपने तफ़ाऊल के रूप में (क्योंकि आपने लिखा कि अभी मुझे यह स्पष्ट नहीं हुआ कि यही लड़का मुसलेह मौऊद और लम्बी आयु पाने वाला है या कोई ओर है) महमूद रखा क्योंकि उस पुत्र का नाम अल्लाह तआला की ओर से महमूद रखा गया था और चूंकि इल्हाम में उसका नाम बशीर सानी भी रखा गया था इसलिए उसका पूरा नाम बशीरुद्दीन अहमद रखा गया। ख़ुदा की क़ुदरत है कि उस लड़के की जो खलाई रखी गई वह गंभीर रोगों से पीड़ित थी। इतने गंभीर रोगों से कि उसके सात आठ बल्कि नौ बच्चे कुछ बचपन में और कुछ वयस्कता में सिल और दिक (तपेदिक) से मर गए थे। उस औरत ने उस लड़के के माता-पिता की अनुमति प्राप्त किए बिना उसे दूध पिला दिया। आमतौर पर इस प्रकार की औरतों की आदत होती है कि वह अपने घरों में चली जाती हैं और इस कारण कि बच्चों को जल्दी

वापस न लाना पड़े उसे दूध पिला देती हैं। इस औरत ने भी बिना अनुमति के उस लड़के को दूध पिला दिया और इस प्रकार दिक़ और सिल तथा ख़नाज़ीर के कीटाणु उस बच्चे के अन्दर चले गए। अत: जब वह दो वर्ष का हुआ तो पहले उसे खाँसी हुई और फिर गंभीर ख़नाज़ीर (कण्ठमाला) से पीड़ित हो गया और कई वर्षों तक बीमार रहा क्योंकि उसके माध्यम से अल्लाह तआला बहुत बड़ा निशान (संकेत) दिखाना चाहता था, इसलिए ख़ुदा ने उसको बचा लिया। लेकिन ख़नाज़ीर का रोग उसे बना रहा बल्कि कई बार ख़नाज़ीर की गिलटियां गेंद के आकार तक सूज जातीं और बारह तेरह वर्ष तक लगातार ऐसा ही होता रहा। डॉक्टर और हकीम तरह-तरह की औषधियों से उसकी मालिश कराते और खाने के लिए भी कई प्रकार की औषधियाँ देते। जब वह लड़का जवान हुआ तो इस रोग ने दूसरा रूप धारण कर लिया और उसे सात-आठ महीनों तक रुक-रुक कर बुख़ार होता रहा। डॉक्टर कहते थे कि उसका बचना मुश्किल है और अब शायद ही सुरक्षित रह सके इस कारण वह मदरसे में भी पढ़ नहीं सकता। जब वह मदरसे में जाता तो चूंकि आंखों में कुकरे भी थे इसलिए वह बोर्ड की ओर देख नहीं पाता था और यदि देखता तो उसके सिर में दर्द शुरू हो जाता इस कारण वह पढ़ाई में भी ध्यान केन्द्रित नहीं रख पाता था। यहां तक कि उसके अध्यापकों ने जमात के संस्थापक से शियाकत की कि यह लड़का पढ़ता नहीं। उन्होंने कहा यह बीमार है उस पर ज़्यादा ज़ोर न दो। मदरसे में आता रहे और कोई शब्द उसके कान में पड़ जाए इतना ही काफ़ी है ज़्यादा ज़ोर देने की आवश्यकता नहीं। यहाँ तक कि उसने स्कूल की कोई परीक्षा पास नहीं की। प्राइमरी में शायद पास हो गया हो तो हुआ हो और शायद वह प्राइमरी में भी पास नहीं हुआ हो लेकिन मिडल में वह ज़रूर फ़ेल हो गया और इन्टरन्स में भी ज़रूर फ़ेल हुआ। उसकी योग्यता का यह हाल था कि जब वह इन्टरन्स में पढ़ता था तो परीक्षा में जाने से पहले उसने घर पर परीक्षा दी तो अंग्रेज़ी के एक सामान्य से शब्द Two को उसने Tow लिख दिया और अध्यापक ने आश्चर्य से पूछा कि यह क्या शब्द है? मैं तो इसे नहीं जानता। यह उसकी शिक्षा की हालत थी। फिर जब जमात के संस्थापक मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब का देहान्त हुआ तो जमाअत के दिल में तहरीक पैदा हुई कि उनका भी एक ख़लीफ़ा नियुक्त होना चाहिए जो कि इस्लाम की सुन्नत है। इसलिए उन्होंने हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब को ख़लीफ़ा नियुक्त कर दिया और लोगों ने समझ लिया कि वह भविष्यवाणी जो एक लड़के के उत्तराधिकारी होने के विषय में थी वह ग़लत साबित हुई और कोई और ख़लीफ़ा बन गया। इसके बाद जमाअत में फूट पड़ गई। सदर अंजुमन अहमदिया जो केन्द्रीय सभ थी, इसका अधिकांश भाग किसी बात मैं दूसरे लोगों से लड़ पड़ा। मुख्य विवाद यह था कि यह नौजवाद कहीं संस्थापक जमात अहमदिया का उत्तराधिकारी न बन जाए और उन्होंने सिर से पैर तक उसके विरोध में ज़ोर लगाया यह लोग बहुत प्रसिद्ध लेक्चरार थे और दूर-दूर तक इनका नाम फैला हुआ था। इनमें एक का नाम तो शायद आपने सुना ही होगो ख्वाजा कमालुद्दीन साहिब था। वह जहाँ जाते उनके लेक्चर प्रसिद्ध हो जाते। इंगलिस्तान मैं भी वह मुबल्लिग़ (प्रचारक) रहे और तुर्की, मिस्र तथा अफ्रीका के क्षेत्रों में

भी उन्होंने यात्रा की और उन्हें बहुत लोकप्रियता हासिल हुई। दूसरे मौलवी मुहम्मद अली साहिब थे यह उन दिनों क़ुर्आन करीम का अंग्रज़ी अनुवाद किया करते थे तथा इस कारण बहुत प्रसिद्ध थे। इसी तरह डॉक्टर मिर्ज़ा याक़ूब बैग साहिब और डॉक्टर सय्यद मुहम्मद शाह साहिब, यह सभी उस लड़के के विरोधी हो गए और चूंकि यह सदर अंजुम अहमदिया के सदस्य भी थे इसलिए उन्होंने पंजाब और हिन्दुस्तान के विभिन्न क्षेत्रों में दौरे करने शुरू कर दिए ताकि जमाअत में इस लड़के के विरुद्ध विद्रोह उत्पन्न हो जाए और ताकि ऐसा न हो कि यह लड़का ख़लीफ़ा बन जाए। मानो इस लड़के के बारे में कोई पेशगोई पूरी होनी थी तो दुनिया ने पूरी कोशिश की कि वह पेशगोई पूरी न हो। यदि वह लड़का चुपचाप ख़लीफ़ा बन जाता जैसे पीरों में प्रथा है कि पिता के बाद पुत्र ही उत्तराधिकारी बनता है तो लोग कहते मिर्ज़ा साहिब की यह पेशगोई संयोगवश पूरी हुई है। चूंकि पीरों में नियम है कि बड़े की मृत्यु हो जाए तो पुत्र ख़लीफ़ा बनता है इसलिए मिर्ज़ा साहिब की मृत्यु के बाद उनका पुत्र उत्तराधिकारी बन गया इसमें अजीब बात क्या है। लेकिन अल्लाह तआला ने हज़रत मिर्ज़ा साहिब की मृत्यु के बाद हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब को ख़लीफ़ा नियुक्त किया तथा इस प्रकार यह प्रश्न उठा कि यह नियुक्ति पीरों के सामान्य दस्तूर के अनुसार हुई है। फिर यदि हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब की मृत्यु के पश्चात् वह लड़का बिना विरोध के ख़लीफ़ा बन जाता तो भी लोग कह सकते कि चूंकि इस लड़के के पिता जी की बुज़ुर्गी का एहसास जमाअत को था इसलिए उन्होंने इस बुज़ुर्गी का एहसास करते हुए उनके पुत्र को ख़लीफ़ा बना लिया। परन्तु ऐसा नहीं हुआ अपितु अल्लाह तआला ने ऐसे सामान पैदा कर दिए कि जमाअत के सभी प्रमुख लोग उस लड़के के विरोधी हो गए और उन्होंने इतना कड़ा विरोध किया कि सारी जमाअत में एक आग सी लगा दी (विरोध किया) और उन्होंने फ़ैसला किया कि चाहे कुछ भी हो जाए यह लड़का ख़लीफ़ा न बने अपितु क्रोध में उन्होंने यहाँ तक कह दिया कि जमाअत को कोई ख़लीफ़ा होना ही नहीं चाहिए। लेकिन जब हज़रत ख़लीफ़ा प्रथम की मृत्यु हुई और आपकी मृत्यु के बाद जमाअत इकट्ठा हुई तो अल्लाह तआला ने जिस का यह निर्णय था कि यह पेशगोई अवश्य पूरी हो ऐसे साधन किए कि उन लोगों ने इस भय से कि कहीं जमाअत उस लड़के को ही ख़लीफ़ा नियुक्त न कर ले, जमाअत के ईमान (आस्था) के विरुद्ध यह कहना शुरू कर दिया कि ख़िलाफ़त होनी ही नहीं चाहिए। परिणाम यह हुआ कि जब इनके यह विचार जमाअत के सामने आए तो लोगों ने कहा कि यदि यह लोग ऐसा कहते हैं कि अमुक ख़लीफ़ा न हो बल्कि अमुक हो तो और बात थी मगर अब तो यह कहते हैं कि ख़िलाफ़त का सिलसिला ही जारी नहीं रहना चाहिए और यह बात हमारे सिद्धांतों के विरुद्ध है हम इसे मानने के लिए तैयार नहीं है। अत: जमाअत ने उस समय इस लड़के के हाथ पर बैअत कर ली और इस प्रकार वह पेशगोई जो हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने होशियारपुर से प्रकाशित की थी कि मेरा एक पुत्र होगा और वह मेरा उत्तराधिकारी होगा बड़ी महिमा के साथ परी हुई।

आप लोग जानते हैं कि इस समय मैं किस की ओर इशारा कर रहा हूँ **वह लड़का मैं ही**

हूँ जो बारह-तेरह वर्ष तक ख़नाज़ीर के रोग में पीड़ित रहा। मैं वही हूं जो महीनों नहीं वर्षो बीमार तथा थके हुए लोगों की तरह बीमार रहा जैसा कि हमारी भाषा में कुछ लोग कहते हैं कि वह हींग हगते[1] हैं। मैं वही हूं जो बहुत कमज़ोर, दुबला तथा दुर्बल था। मैं वहीं हूं जिस की आंखों में चौदह वर्ष की आयु में गंभीर मोतियाबिंद हो गया और मैं पढ़ाई के अयोग्य हो गया यहाँ तक कि मैं बोर्ड की ओर आँख उठा कर भी देख नहीं सकता था। मैं वही हूं जो मिडल में भी फ़ेल हुआ और इन्टरन्स में भी। और मैं वही हूं जिसे अंग्रेज़ी का एक साधारण शब्द Two भी लिखना नहीं आता था और जिसने Two की बजाय Tow लिख दिया। फिर मैं वही हूं जिसके विरोध में जमाअत के बड़े-बड़े लोग खड़े हो गए। सभी विभागों पर उन का नियंत्रण था, मदरसा उनके पास था, लंगर उनके पास था, रेव्यू (समीक्षा) उनके पास था, जमाअत का प्रबंध उनके हाथों में था, ख़ज़ाना उन के पास था और विभिन्न पदों पर आसीन थे। फिर मैं ही वही हूं जो स्वयं का भी विरोधी था इसलिए मैंने मौलवी साहिब के सामने स्वयं यह प्रस्ताव रखा कि आप ख़िलाफ़त का इन्कार न करें किसी एक व्यक्ति का नाम प्रस्तुत कर दें मैं सब से पहले उसके हाथ पर बैअत करने को तैयार हूं मगर बावजूद इसके कि मैंने मौलवी साहिब को यह कहा कि आप किसी का नाम पेश करें मैं उसकी बैअत करने के लिए तैयार हूं क्योंकि ख़ुदा की इच्छा यही थी कि इस शहर में उसने जो इल्हामात नाज़िल फ़रमाए थे उनको पूरा करे और दुनिया को अपनी क़ुदरत का निशान दिखाए इसलिए उनकी अक़्ल (बुद्धि) पर ऐसे पत्थर पढ़ गए कि उन्होंने मेरी इस बात को स्वीकार नहीं किया और चूंकि जमाअत इस बात पर अड़ी हुई थी कि किसी व्यक्ति को ख़लीफ़ा ज़रूर बनाया जाए इसलिए मौलवी मुहम्मद अली साहिब की बात किसी ने नहीं मानी और जमाअत ने मुझे अपने ख़लीफ़ा बना लिया।

मैं कह चुका हूं कि मैं बचपन से ही शिक्षा से विमुख रहा हूं वह समझते थे कि जब ऐसा मनुष्य एक विद्वान जमाअत का इमाम बनेगा तो जाअत टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी और इसमें क्या संदेह है कि बाहरी परिस्थितियों के दृष्टि से इस बात की संभावना हो सकती थी। इसलिए डॉक्टर मिर्ज़ा याक़ूब बेग साहिब जो एक सफ़ल डॉक्टर थे उन्होंने बाहर आ कर हमारे मदरसे की ओर इशारा करते हुए कहा आज तो हम जा रहे हैं क्योंकि जमाअत ने हमारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया लेकिन तुम थोड़े ही दिनों में देखोगे कि इस मदरसे पर ईसाई क़ब्ज़ा कर लेंगे और पूरी इमारत उनके पास चली जाएगी। यह उस समय कहा गया था जब ख़ज़ाने (राजकोष) में केवल ग्यारह-बारह आने के पैसे थे और सत्राह अठारह रुपया क़र्ज़ था। यह लोग जो बहुत धनी थे और जमाअत में मान-सम्मान रखते थे उन्होंने समझा कि जब हम क़ादियान को छोड़ कर चले जाएंगे तो जमाअत टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी उस समय मेरी आयु पच्चीस वर्ष थी और मेरी सारी आयु बीमारियों में बीत गई थी। मैंने धार्मिक या सांसारिक शिक्षा किसी मदरसे से प्राप्त नहीं की थी और मेरे मुक़ाबले में (विपरीत) जो लोग खड़े थे वह क़ौम के लीडर, सरदार (प्रमुख) और गणमान्य व्यक्ति थे, अत: सांसारिक दृष्टिकोण से यही

[1] (बहुत बीमार रहना, दुर्बल व निर्बल)

माना जा सकता था कि वह क़ौम डूब जाएगी जिसे ऐसा नेता और सरदार मिला हो लेकिन जिस समय उन्होंने यह कहा कि अब क़ौम टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी उस समय मैं अपने घर गया और मैंने अपने ख़ुदा से यह दुआ की कि ख़ुदाया! मैंने इस ओहदे (पद) की कभी इच्छा नहीं की, मैंने तुझसे कभी नहीं चाहा कि कि तू मुझे ख़लीफ़ा नियुक्त कर दे। अब जब कि तू ने मुझे ख़लीफ़ा बनाया है और तू ने स्वयं मुझे इस कार्य के लिए चुना है तो ऐ मेरे रब्ब! तू मुझे सक्षम कर जिस द्वारा मैं इन सरदारों (प्रमुखों) का मुक़ाबला कर सकूं अन्यथा मेरे भीतर इनका मुक़ाबला करने की बिल्कुल भी क्षमता नहीं। इनमें से कुछ मेरे शिक्षक हैं और शेष ऐसे हैं जिनका अंजुमन की संपत्ति तथा विभागों पर नियंत्रण है उस समय हमारी इतनी भी शक्ति नहीं थी कि यदि यह लगो हमें मस्जिद से निकल जाने को कहते तो हम अपनी मस्जिद में भी ठहर सकते। अत: मैंने ख़ुदा से यह दुआ (प्रार्थना) की। रात को जब मैं लेटा तो मुझे इल्हाम हुआ।

"कौन है जो ख़ुदा के कामों को रोक सके"

और चूंकि इन लोगों ने कहा था कि जमाअत टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी और आज से वह विनाश तथा बर्बादी के रास्ते में चल पड़ेगी इसलिए ख़ुदा ने मुझे इल्हाम किया कि لَيُمَزِّقَنَّهُم हे महमदू! यह लोग जो अपने ज्ञान तथा अपनी शक्दि और अपने जत्थे तथा अपनी संपत्ति के दावे कर रहे हैं हम उनको टुकड़े-टुकड़े कर देंगे। इसलिए मैंने उसी समय इस लेख का एक विज्ञापन प्रकाशित कर दिया वह विज्ञापन आज तक मौजूद है अन्य लोग भी गवाही दे सकते हैं और अपने भी कि उस में जो कुछ लिखा गया था वह किस महिमा से पूरा हुआ। मैंने उस विज्ञपान की हैडिंग (शीर्षक) यह रखी था कि

"कौन है जो ख़ुदा के कार्यों को रोक सके"

फिर मैंने कहा था कि ख़ुदा ने मुझे बताया है कि لَيُمَزِّقَنَّهُم वह उनको टुकड़े-टुकड़े कर देगा।

उस समय हमारी जमाअत का 98 प्रतिशत भाग उनके साथ था और पाँच प्रतिशत हमारे साथ था और वह लोग गर्व से इस बात का प्रचार करते थे कि हम वह हैं जिन के पक्ष में जमाअत के अधिकतर लोग (बहुमत) हैं और यह बात हमारी सच्चाई का स्पष्ट प्रमाण है। लेकिन अभी इस इल्हाम को तीन सप्ताह भी नहीं हुए थे कि जमाअत के 95 प्रतिशत भाग ने मेरी बैअत कर ली और पाँच प्रतिशत उनके साथ रह गए। यह ख़ुदा का वह निशान है जो उसने पूरा किया और जिस में जमात अहमदिया के संस्थापक ने यह ख़बर दी थी कि मेरा एक बेटा होगा जो मेरा ख़लीफ़ा होगा और ख़ुदा उसका समर्थन करेगा। इसके बाद अल्लाह तआला ने हर जगह मेरा समर्थन तथा सहायता करनी शुरू कर दी।

मैंने बताया है कि मैंने किसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त नहीं की लेकिन इसके बाद अल्लाह तआला ने मुझे रोया में बताया कि मुझे उस द्वारा क़ुर्आन करीम का इल्म (ज्ञान) प्रदान किया गया है और

चूंकि क़ुर्आन करीम के ज्ञान में दुनिया के सारे विज्ञान शामिल हैं इसलिए इसके बाद जमाअत और इस्लाम के लिए मुझे जिस ज्ञान की भी ज़रूरत महसूस हुई वह ख़ुदा ने मुझे सिखा दिया। इसलिए आज मैं **दावे के साथ यह ऐलान करता हूं बल्कि आज से नहीं बीस-पच्चीस वर्ष से मैं यह ऐलान कर रहा हूं कि दुनिया का कोई फ़लास्फ़र (दार्शनिक), दुनिया का कोई एम.ए, भले ही वह विलायत से ही क्यों न पास हुआ हो और भले ही किसी ज्ञान का जानने वाला हो, भले ही वह दर्शनशास्त्र का विशेषज्ञ हो, भले ही वह तर्कशास्त्र का विशेषज्ञ हो, भले ही वह मनोविज्ञान का विशेषज्ञ हो, भले ही वह साईंस (विज्ञान) का विशेषज्ञ हो, भले ही वह संसार के किसी ज्ञान का विशेषज्ञ हो यदि मेरे सामने क़ुर्आन और इस्लाम पर कोई आपत्ति उठाए तो न केवल मैं इस आपत्ति का उत्तर दे सकता हूं अपितु ख़ुदा की कृपा से उसकी बोलती बंद कर सकता हूं। संसार का कोई इल्म (ज्ञान) नहीं जिसके बारे में ख़ुदा ने मुझे जानकारी (ज्ञान) न दी हो और इतना सही ज्ञान जो अपने जीवन को सही रखने या क़ौम के नेतृत्व के लिए आवश्यक हो मुझे न दिया गया हो।**

फिर इसके साथ ही ख़ुदा तआला ने तुरंत मुझे हिम्मत (साहस) दिया और मैंने दुनिया के विभिन्न हिस्सों में इस्लाम और अहमदिय्यत को फैलाने के लिए मिशन स्थापित किए। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वसल्लाम का स्वर्गवास हुआ उस समय केवल हिन्दुस्तान और किसी सीमा तक अफ़ग़ानिस्तान में जमाअत अहमदिया स्थापित थी। बाक़ी किसी जगह अहमदिया मिशन स्थापिन नहीं था। मगर जैसे कि ख़ुदा ने पेशगोई में बताया था वह **"ज़मीन के किनारों तक प्रसिद्धि प्राप्त करेगा"**[2]❶ अल्लाह तयाला ने मुझे सामर्थ्य दिया कि विभिन्न देशों में अहमदिया मिशन स्थापित करूं। इसलिए मैंने अपनी ख़िलाफ़त के आरंभ में ही इंगलिस्तान, सेलून और मारिशस में अहमदिया मिशन स्थापित किए। फिर यह जमात (श्रंखला) बढ़ी और बढ़ती चली गई अतः ईरान में, रूस में, ईराक़ में, मिस्र, में, शाम में, फ़िलिस्तीन में, लेगूस नाइजीरिया में, गोल्ड कोस्ट में सिएरा लियोन में, पूर्वी अफ्रीका में, यूरोप में से इंगलिस्तान के इलावा स्पेन में, इटली में, चेकोस्लोवाकिया में, हंगरी में पोलैंड में, यूगोस्लाविया में, अल्बानिया में, जर्मनी में, संयुक्त राज्य अमेरिका में, अर्जेंटीना में, चीन में, जापान में, मलाया में, स्टरीट सेटलमेंन्टस[3]❷ में, स्माट्रा में, जावा में, सूरोबाया में, काशग़र में ख़ुदा के फ़ज़्ल (कृपा) से मिशन स्थापित हुए। इन में से कुछ मुबल्लिग़ इस समय दुश्मन की

❶तज़्किरह पृष्ठ 139 चतुर्थ एडिशन

❷(स्ट्रेट्स सेटलमेंट्स) मलाया में ब्रिटेन की पूर्व शाही नौ आबादी 129 ई. से 1858 तक ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने पीनानंग, मलका और सिंगापुर को एक प्रशासनिक घटक के रूप में प्रशासित किया गया था। इसके बाद थोड़े समय के लिए इंडिया आफिस ने प्रबंध अपने हाथ में ले लिया। 1867 ई. में यह नई आबादी स्थापित और 1946 ई. में समाप्त कर दी गई। अब सिंगापुर में एक अलग कॉलोनी (उपनिवेश) है लेकिन बाकी हिस्से मलाया संघ में शामिल हो गए हैं। (उर्दू जामेअ इनसाइक्लोपीडिया खंड 1 पृष्ठ 741 प्रकाशित लाहौर 1987 ई.)

क़ैद में हैं, कुछ काम कर रहे हैं। और कुछ मिशन युद्ध के कारण अस्थायी रूप से बंद कर दिए गए हैं अतएव दुनिया की कोई क़ौम ऐसी नहीं जो आज जमात अहमदिया से अवगत न हो, दुनिया की कोई क़ौम ऐसी नहीं जो यह महसूस न करती हो कि अहमदिय्यत एक बढ़ता हुआ सैलाब है जो उनके देशों की ओर आ रहा है। हकूमतें इसके प्रभाव को महसूस कर रही हैं बल्कि कुछ हुकूमतें इसके दमन की भी कोशिश करती हैं। इसलिए जब रूस में हमारा मुबल्लिग़ गया तो उसे गंभीर पीड़ाएं दी गईं। उसे मारा भी गया, पीटा गया और क़ैद में रखा गया लेकिन क्यूंकि ख़ुदा का वादा था कि वह मेरे माध्यम से इस सिलसिले को फैलाएगा और इसको दुनिया के किनारों तक प्रसिद्ध करेगा इसलिए उसने अपनी कृपा व दया से इन सभी स्थानों में अहमदिय्यत को पहुंचाया बल्कि कुछ स्थानों में बड़ी-बड़ी जमाअतें स्थापित कर दीं। बहरहाल जब इस प्रकार के संकेत प्रकट हुए तो जमाअत ने कहा कि वह भविष्यवाणी जिसकी सूचना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को शैख़ मेहर अली साहिब के तबेले में दी गई थी वह पूरी हो गई मगर मैं सदैव इसको स्वीकार करने से बचता रहा और मैंने कभी यह दावा नहीं किया कि मैं इस पेशगोई का प्रतिरूप (संकेत) हूं। मैंने अपने हृदय में कहा जो ख़ुदा का कलाम है कि जब तक ख़ुदा इसके बारे में यह स्पष्ट न कर दे कि यह मेरे माध्यम से पूरा हो चुका है उस समय तक बोलना मेरे लिए उचित नहीं है। मुझे क्या पता है कि मैं इस पेशगोई का प्रमाण (संकेत) हूं या नहीं हूं? यदि मैं इस पेशगोई का प्रमाण नहीं हूं तो मैं क्यों एक ग़लत बात कहूं और यदि मैं इसका प्रमाण हूं तो जिस ख़ुदा ने यह पेशगोई फ़रमाई है उसी का यह कर्तव्य है कि वह मुझे सूचित करे कि मैं ही इसका प्रमाण हूं। अत: मानो जमाअत ने बार-बार ज़ोर दिया कि मैं अपने आप को इस भविष्यवाणी का प्रमाण घोषित कर दूं मगर मैंने कभी अपने आपको इस भविष्यवाणी का प्रमाण (संकेत) घोषित नहीं किया और जब भी यह पेशगोई मेरे सामने आती मैं चुप कर के इसे टाल देता। उस समय दुश्मन ने चैलेंज भी किए कि यदि यह व्यक्ति इस भविष्यवाणी का प्रमाण है तो बोलता क्यों नहीं। परन्तु मैंने सदैव यही समझा कि ख़ुदा से आगे बढ़ना तक़वा के विरुद्ध है। अत: मैं चुप रहा और बावजूद जमाअत के आग्रह और दुश्मनों के चैलेंज कि मैंने कभी इसके बारे में कुछ नहीं कहा। यहाँ तक कि इस पर तीस वर्ष का लम्बा समय गुज़र गया और यह लेख लगभग ठंडा हो गया। दोस्तों ने ज़ोर दिया कि मैं इस भविष्यवाणी का प्रमाण होने की घोषणा करूं परन्तु मैं चुप रहा। दुश्मनों ने कहा कि यदि यह इस भविष्यवाणी का प्रमाण है तो बोलता क्यों नहीं? परन्तु मैं नहीं बोला।

(दावा मुस्लेह मौऊद के संबंध में वैभवशाली घोषणा पृष्ठ 1-20)

❊ ❊ ❊

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk
Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road
Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kachegud
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

(AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY)

H.O & FACTORY : 20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

अरबईन अतफ़ाल

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुछ हदीसें

अनुवादक- इब्नुल मेहदी लईक एम ए

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अज़ हज़रत मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब रजियल्लाहो तआला अन्हो लिखते हैं :

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि : "जो व्यक्ति मेरी उम्मत को दीन समझाने के लिए चालीस हदीसें याद कर ले अल्लाह तआला उसे क़यामत के दिन फ़ुक़हा (ज्ञानियों) में उठाएगा और मैं उसकी शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करूंगा और उसके हक में गवाही दूंगा।"

इस पवित्र कलाम पर अमल करके मैंने भी अब चालीस हदीसों के मजमूआ का इस तरह संकलन किया है कि इनका समझना और याद करना जन साधारण बल्कि औरतों तथा छोटे बच्चों के लिए भी आसान हो। अर्थात अधिकतर हदीसें केवल दो शब्दों की हैं और जो तीन शब्दों की भी हैं उनमें एक शब्द ऐसा मौजूद है जिसे हर उर्दू बोलने वाला आसानी से समझ सकता है।

(21)

اَلتَّعۡزِيَةُ مَرَّةٌ

अत्ताज़ियतो मर्रतुन

(ताज़ियत एक बार ही काफ़ी है।)

अर्थात यदि कोई मर जाए तो एक बार ही वहां जा कर ताज़ियत करनी काफ़ी है। यह नहीं कि बिरादरी इकट्ठी हो रही है और चालीस दिन तक हर आदमी का वहाँ हाज़िर होना ज़रूरी है। यह सब रसमें इस्लाम से हट कर हैं।

(22)

اَلۡخَالَةُ وَالِدَةٌ

अल ख़ा ल तो वाले द तुन

(ख़ाला (मौसी) भी मां ही है।)

अर्थात उनका आदर और सेवा भी मां के समान करनी चाहिए। दूसरे यह कि यदि कोई स्त्री बच्चे को छोड़ कर मर जाए तो उस स्त्री की बहन से शादी करना ऐसा है मानो बच्चों की अपनी मां वापस आ गई।

(23)

اَلدُّعَآءُ هُوَ الۡعِبَادَةُ

अद्दुआओ हुवल इबादतो

(दुआ ही तो असल इबादत (भक्ति) है।)

जिन लोगों ने इबादत को दुआ से अलग चीज़ माना है वह बड़ी ग़ल्ती पर है। क्योंकि दुआ से, इन्सान का सम्बन्ध ख़ुदा से स्थापित करना है। इस लिए इबादत की रूह या यूँ कहो कि असल इबादत दुआ ही है।

(24)

اَلدُّنۡيَا مَزۡرَعَةُ الۡاٰخِرَةِ

अद्दुनिया मज़रअतुल आख़िरते

(दुनिया आख़िरत की खेती है।)

यानी जो कर्म दुनिया में करोगे उन का फल परलोक में ज़रूर मिलेगा। यहां नेक कर्म कर लो तो वहां उन का नेक बदला तुमको मिलेगा।

(25)

صُوْمُوْا تَصِحُّوْا

सूमू त सिहहू

(रोज़े रखा करो ताकि सेहत हासिल हो।)

अर्थात एक उद्देश्य रोज़े का यह भी है कि आदमी की सेहत ठीक हो जाए। और शरीर के व्यर्थ पदार्थ जल कर शरीर संतुलन की अवस्था में आ जाए। यह मतलब नहीं कि कोई बीमार हो तो वह भी इस तरह सेहत हासिल कर लिया करे।

(26)

اَلْعَيْنُ حَقٌّ

अल ऐनो हक़्क़ुन

(नज़र लगना सच है।)

क्योंकि नज़र लगना इल्मे तवज्जुह (मिसमेरेज़म अर्थात ध्यान-योग विद्या) की ही शाख़ा है इसलिए इसका इंकार ठीक नहीं परन्तु यह बहुत विस्तार से ब्यान करने वाली है। इसलिए यहां इस पर बहस नहीं हो सकती।

(27)

اَلصَّبْرُ رِضًا

अस्सबरो रिज़न

(सब्र, ईश्वराज्ञा पर राज़ी होने का नाम है।)

न यह कि जब कुछ न हो सका तो कह दिया कि हम सब्र करते हैं। पर दिल में ख़ुदाई तक़दीर (दैवीय इच्छा) से नाराज़ हैं।

(28)

اَلْمُحْتَكِرُ مَلْعُوْنٌ

अल मुह त केरो मलऊनुन

(अनाज को रोकने वाला कि जब मंहगा हो जाए तब
बेचूँ, ख़ुदा की रहमत से दूर है।)

ऐसा मनुष्य हर धर्म तथा हर जाति की दृष्टि में सचमुच लानती है। उसकी नियत ही बुरी है। अर्थात यह कि लोग भूखे मरने लगे तो उनसे ख़ूब रूपये कमाऊँ।

(29)

اَلْمُسْلِمُ اَخُو الْمُسْلِمِ

अलमुसलेमो अख़ुल मुसलेमे

(एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है।)

इसलिए मुसलमानों में आपस में भाईचारा तथा मुरव्वत (लिहाज़दारी) होनी चाहिए। क़ुर्आन मजीद ने भी "इन्न मल मोअ मेनून इख़ व तुन" फ़र्माया है।

(30)

اَلْمَطْعُوْنُ شَهِيْدٌ

अल मतऊनो श हीदुन

(ताऊन (प्लेग) से मरने वाला शहीद है।)

अर्थात यदि मुसलमान ताऊन से मरे तो उस की मौत शहादत की मौत है। क्योंकि ताऊन की तकलीफ़ से उसके गुनाहों का कफ़्फ़ाराह (प्रायश्चित) हो जाता है।

(31)

لَاوَصِيَّةَلِوَارِثٍ

ला व सिय्य त लेवारेसिन

(वारिस के लिए वसिय्यत मना है।)

अर्थात जो ख़ुद शरई वारिस (धर्म के अनुसार वारिस) हो जैसे बेटा, बाप या बीवी। इसके लिए वसिय्यत करनी मना है। जिसका भाग शरीअत ने ख़ुद निश्चित कर दिया हो उसके लिए विरसा से अधिक वसीय्यत करनी नाजाइज़ है। हाँ जो वारिस नहीं है जैसे बहन, भाई, पोता, उन के लिए तिहाई माल में से वसिय्यत हो सकती है।

(32)

لَاتَعُدْفِيْ صَدَقَتِكَ

ला त उद फ़ी स द क़ ते क

(अपना सदक़ा (दान) वापस न ले।)

जो चीज़ एक बार सदक़ा के तौर पर दे दी जाए उसे वापस लेना बल्कि कीमत दे कर भी वापस लेना मना है। हां यदि किसी ओर ने सदक़ा दिया हो तो सदक़ा देने वाला अपने इस सदक़ा को तोहफ़े के तौर पर अपने और दोस्तों में बाँट सकता है सिवाय उसके जिसने सदक़ा दिया हो।

(33)

اَلنَّدَمُ تَوْبَةٌ

अ न्न द मो तौ ब तुन

(गुनाह पर पशेमान (शर्मिन्दा) होना ही असल तौबा है।)

गुनाह पर केवल बोल कर तौबा करना कुछ चीड़ नहीं है। जब तक शर्मिन्दगी और पशेमानी साथ न हो।

(34)

اِجْتَنِبُوْا كُلَّ مُسْكِرٍ

इज त नेबू कु ल्ल मुसकेरिन

(हर नशा आवर चीज़ से बचो।)

क्योंकि हर नशे की आदत सेहत की तबाही, आदत की ग़ुलामी, और अक़्ल की कोताही (कमी) पैदा करती है।

(35)

لَا تَتَمَنَّوُاالْمَوْتَ

ला त त मन्न वुलमौ त

(मौत की आरज़ू (इच्छा) न करो।)

क्योंकि मौत के बाद कर्म करने बन्द हो जाते हैं और हो सकता है कि इसकी इच्छा करते करते आख़िर ख़ुदकुशी (आत्महत्या) के विचार ही पैदा हो जाएं। मौत की आरज़ू करने के यह अर्थ भी हैं कि ऐसा आदमी ख़ुदा की नेअमतों (मेहरबानियों) का इंकार करने वाला है। और समझता है कि ख़ुदा का मुझ पर यहाँ कोई एहसान नहीं।

(36)

اَلسَّلَامُ قَبْلَ الْكَلَامِ

अ स्स लामों क़ब लल कलाम

(बात करने से पहले सलाम कर लिया करो।)

अर्थात जब किसी से मिलो या किसी सभा में जाओ तो पहले सलाम करो। इसके बाद जो बात करनी हो करो।

(37)

تَرْكُ الدُّعَآءِ مَعْصِيَةٌ

तरकुद्दुआए मअसियतुन

(दुआ को छोड़ना गुनाह है।)

जो लोग यह समझते हैं कि ख़ुदा हमारी हालत को ख़ुद जानता है इसलिए हमें उस से मांगना या दुआ करना ठीक नहीं, वह इस पर विचार करें।

(38)

زِنْ وارْجِحْ

ज़िन वरजिह

(तोल, और झुकता तोल)

यह आदेश ख़ासतौर पर व्यापारियों के लिए है कि वह बजाए घाटा पहुँचाने और डंडी मारने के हक़ीक़त में दूसरे पर एहसान (भलाई) करें।

(39)

اِتَّقُوا اللّٰهَ فِي النِّسَآءِ

इत्त क़ुल्लाह फ़िन्नेसाए

(औरतों के बारे में ख़ुदा से डरते रहो।)

क्योंकि वह कमज़ोर, कम ज्ञान वाली, और महकूम (ग़ैर आज़ाद, पराधीन) हैं। अत: उनके अधिकारों का ख़्याल रखो। और उनकी अच्छी तरबियत करो।

(40)

طَلَبُ الْحَلَا ل جِهَادٌ

तलबुल हलाले जिहादुन

(हलाल रोटी कमाना भी जिहाद है।)

ख़ास तौर से इस युग में तो हलाल रोटी (रोज़ी) प्राप्त करना बड़ा कठिन है। चोर बाज़ार, धोखा, ठगबाज़ी, दूसरों के अधिकार छीनना, बेईमानी इस तरह फैले हैं कि हलाल, और हराम में कोई फ़र्क नहीं रहा दूध बेचने वाले के मुँह में रोज़ा होता है। और हाथ में पानी का लोटा, जो वह दूध में मिलाता है। इस तरह सौ रुपये महीने की नौकरी करने वाला हलाल बीवी से भागता है कि मेरी तन्ख़ाह पाँच सौ रुपये हो जाएगी तब मैं निकाह करूँगा। और उस समय तक वह जितने तरीक़े से अपनी इच्छा पूरी करने के प्रयोग करता है शरीयत ने उन सब को हराम ठहराया है।

* * *

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

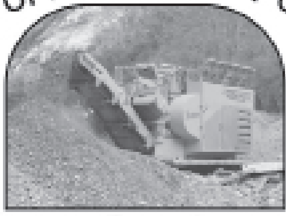

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

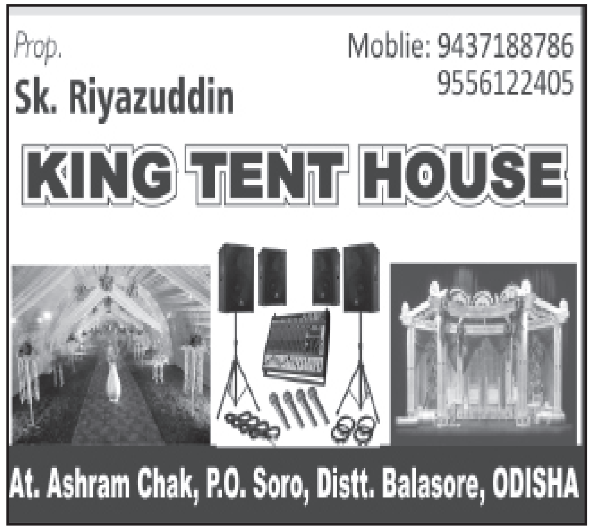
Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE
At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

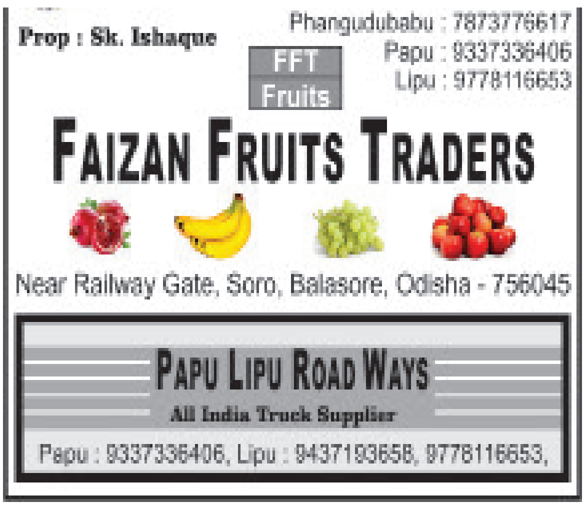
Prop : Sk. Ishaque
FFT
Fruits
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں
PRAN
MANGO
JUICEPAK
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

R
REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal
flipkart
amazon.com
Paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
DL
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3